04 - हिंदीः आत्मसम्मान की पहचान है

05 - भावनाओं और संस्कृति की संवाहिका है हिन्दी

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 14 सितंबर, 2025

06 - तूने मारी इंट्रीया... हिन्दी की बजी घंटियां

07 - हीरो की पहचान बदलने वाला हीरो

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 17, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

भोपाल की बड़ी झील और राजा भोज...

फोटोः गिरीश शर्मा

सुप्रभात

दुनिया बची रहेगी
जैसे बची हुई है
बच्चों में उम्मीद।
दुनिया बची रहेगी
आखिरी लड़की तक
धरती की आखिरी लड़की को
अभी लिखना है
बारिश जैसी अपनी मुहब्बत।
दुनिया बची रहेगी
क्योंकि अभी आखिरी लड़की को
धरती पर नदी की तरह हँसना शेष है।
दुनिया बची रहेगी
यह खबर धरती पर
एक लड़की को लिखनी है।

नीतीश मिश्र

किसी तरह की हिंसा दुर्भाग्यपूर्ण

शांति का रास्ता चुनें

● मणिपुर के इंफाल और चुराचांदपुर में बोले प्रधानमंत्री मोदी

पीएम ने कहा-विकास के लिए शांति का रास्ता ही सर्वोपरि है

इंफाल/चुराचांदपुर (एजेंसी)। पप्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को मणिपुर के चुराचांदपुर और इंफाल पहुंचे। उन्होंने चुराचांदपुर में 7,300 करोड़ औ इंफाल में 1,200 करोड़ से ज्यादा की विकास परियोजनाओं की शिलान्यास और उद्घाटन किया। मणिपुर में मई, 2023 में हिंसा भड़कने के बाद पीएम मोदी का यह पहला दौरा है। प्रधानमंत्री ने इंफाल में कहा- मणिपुर में किसी भी तरह की हिंसा दुर्भाग्यपूर्ण है। हमें राज्य को शांति और विकास के रास्ते पर लेकर जाना है। चुराचांदपुर में पीएम ने कहा- मैं सभी संगठनों से शांति के रास्ते पर आगे बढ़ने

की अपील करता हूं। मैं वादा करता हूं, मैं आपके साथ हूं। पीएम चुराचांदपुर में हिंसा पीड़ितों से मिलने रिलीफ कैंप गए। इंफाल में कार्यक्रम स्थल पर हिंसा पीड़ितों से बात की। चुराचांदपुर कुकी बहुल पहाड़ी इलाका है। इंफाल घाटी इलाका है और मैतेई समुदाय का गढ़ है। पिछले दो साल से, दोनों समुदायों की एक-दूसरे के इलाकों में आवाजाही बंद है। मणिपुर, मां भारती के मुकुट पर सजा मुकुट रत्न है। हमें मणिपुर की विकासवादी छवि को मजबूत करना है।

भारत जल्द ही बनेगा दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

प्रधानमंत्री ने कहा, भारत जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन जाएगा और मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूं कि विकास का लाभ देश के हर कोने तक पहुंचे। मणिपुर को साहस और वीरता की भूमि बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इंफाल से सड़क मार्ग के जरिए चूड़ाचांदपुर जाते समय उन्हें मिले प्यार को वह कभी नहीं भूल सकते। उन्होंने कहा, मैंने विस्थापित लोगों से बात की और मैं कह सकता हूं कि मणिपुर एक नए सवेरे की ओर देख रहा है। लोगों ने शांति का मार्ग चुना है। मोदी ने कहा कि जिन परियोजनाओं का उन्होंने उद्घाटन किया है, वे बुनियादी ढांचे और स्वास्थ्य सेवा के मामले में जीवन को बेहतर बनाएंगी।

प्रदेश में पर्यटन को नई पहचान दिलाने हो रहे हैं निरंतर कार्य : मुख्यमंत्री

गांधी सागर के प्राकृतिक सौंदर्य का लिया आनंद

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को गांधीसागर में चंबल नदी के अद्भुत और आकर्षक प्राकृतिक नजारे का अनुभव करते हुए बोटिंग की। बोट में बैठकर उन्होंने नदी की मनोहारी छटा को निहारा और इस मनमोहक सफर का आनंद लिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में पर्यटन को नई पहचान दिलाने के लिए सरकार निरंतर कार्य कर रही है। चंबल नदी क्षेत्र में विकसित हो रही पर्यटन गतिविधियाँ न केवल स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजित करेंगी बल्कि देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों के लिए भी विशेष आकर्षण का केंद्र बनेंगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गांधी सागर डैम मंदसौर में जेट स्काय की सवारी एवं नाव से मनोहारी छठा और सौंदर्य का आनंद लिया।

बोटिंग के बाद मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने चंबल नदी में जेट स्काय की सवारी भी की। पानी की लहरों पर बाइक बोट चलाते हुए मुख्यमंत्री अत्यंत प्रसन्नचित और उत्साहित नजर आए। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की गतिविधियाँ न केवल पर्यटन को बढ़ावा देंगी बल्कि प्रदेश की प्राकृतिक धरोहरों को देखने-समझने का नया अवसर भी प्रदान करेंगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव सफारी जीप में बैठकर टेंट सिटी का भी अवलोकन किया और यहां की पर्यटन सुविधाओं एवं आकर्षक व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

मुख्यमंत्री ने ऑन द स्पॉट लिया फैसला, पुलिस को दिये कार्रवाई के निर्देश

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रदेश में जहाँ कहीं भी भ्रमण पर जाते हैं नागरिकों की समस्याओं पर संवेदनशीलता से ध्यान देते हैं। गत दिवस रतलाम जिले के सैलाना तहसील के करिया गांव में मुख्यमंत्री डॉ. यादव के भ्रमण के दौरान स्थानीय निवासी पूनमचंद बामनिया ने बताया कि फायनेंस कम्पनी के माध्यम से खरीदे गये वाहन में उनके साथ धोखाधड़ी हुई

है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आवेदक की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए ऑन स्पाट फैसला लिया और पुलिस अधिकारियों को संबंधित के विरूद्ध धारा 420 के तहत कार्रवाई करने के निर्देश दिये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आवेदक पूनमचंद्र को गले लगा कर ढाढस बंधाया कि उनके साथ इंसाफ होगा। रतलाम पुलिस अधीक्षक श्री अमित कुमार ने आवेदन को तत्काल संज्ञान में लेते हुए संबंधित थाने से डायरी बुलवाई।

एमपी में 7,500 पुलिस कॉन्स्टेबलों की होगी भर्ती, 15 सितंबर से कर सकेंगे आवेदन

भोपाल (नप्र)। कर्मचारी चयन मंडल (ESB) ने पुलिस विभाग में 7,500 कॉन्स्टेबलों की सीधी भर्ती का ऑफिशियल नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। आवेदन की प्रक्रिया 15 सितंबर 2025 से शुरू होगी। उम्मीदवारों के आवेदन करने की अंतिम तारीख 29 सितंबर 2025 रखी गई है, जबकि संशोधन की सुविधा 4 अक्टूबर 2025 तक मिलेगी। भर्ती परीक्षा का आयोजन 30 अक्टूबर 2025 से किया जाएगा।

51 किमी की रेल लाइन से दिल्ली से जुड़ा मिजोरम

● पीएम ने किया उद्घाटन, बैराबी-सायरंग के बीच 45 सुरंगें

आइजोल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को मिजोरम की पहली रेल लाइन बैराबी-सायरंग का उद्घाटन किया। 51 किमी लंबी बैराबी-सायरंग रेलवे लाइन के जरिए मिजोरम की दिल्ली, गुवाहाटी और कोलकाता से सीधी रेल कनेक्टिविटि हो गई है। इस रेलवे रूट में 45 सुरंग, 88 छोटे और 55 बड़े ब्रिज हैं। इसके अलावा 114 मीटर ऊंचा देश का दूसरा पियर ब्रिज भी है, जो कुतुब मिनार (72 मीटर) से भी ऊंचा है। पीएम ने कहा, लंबे समय से हमारे देश की कुछ राजनीतिक पार्टियां वोट बैंक पॉलिटिक्स कर रही हैं। जिन्होंने मिजोरम को अनदेखा किया, लेकिन आज मिजोरम फ्रंटलाइन में हैं।

भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान का शुभारंभ आज

15 को राष्ट्रीय हिंदी सम्मान वितरित करेंगे मुख्यमंत्री

भोपाल। राष्ट के निर्माण में भाषाओं के योगदान पर केन्द्रित दो दिवसीय भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान का आयोजन 14-15 सितंबर 2025 को रवीन्द्र भवन, भोपाल में किया जा रहा है। अनुष्ठान का शुभारंभ माननीय श्री इंदर सिंह परमार, मंत्री, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा किया जायेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता पद्मश्री विष्णु पण्ड्या पूर्व अध्यक्ष, गुजरात साहित्य अकादमी, अहमदाबाद द्वारा की जायेगी। भारतीय मातृभाषाओं के महत्व को लेकर कई सत्रों में विचार विमर्श एवं संवाद होंगे। इस अवसर पर प्रदर्शनियों का शुभारंभ भी होगा जिसमें वीर भारत न्यास द्वारा तैयार की गयी 'भारतीय भाषा आलोक- कालजयी साहित्यकारों की छवियाँ', स्वराज संस्थान संचालनालय की 'कलम के सिपाही', माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय की 'सदी साक्षी है' शामिल है। कार्यक्रम प्रारंभ होने से पूर्व रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं के समूह द्वारा पूर्वरंग अंतर्गत 'कविता यात्रा' की प्रस्तुति होगी।

राष्ट्रीय अलंकरण समारोह कल- विज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में हिन्दी के योगदान के लिए स्थापित बहुविध राष्ट्रीय अलंकरण समारोह का आयोजन 15 सितंबर 2025 को सायं 5.00 बजे होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव होंगे। इस अवसर पर राष्ट्रीय हिन्दी भाषा सम्मान अलंकरण से विभूषित देश के अग्रणी मनीषियों को मुख्यमंत्री द्वारा सम्माानित किया जायेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) धर्मेन्द्र सिंह लोधी करेंगे। इस मौके पर विविध प्रकाशनों का लोकार्पण एवं स्वदेशी जागरण अंतर्गत देश हित में द सूत्र का अभियान बीई इंडियन, बीयू 4 इंडियन, हमारी-लक्ष्मी -हमारे पास का शुभारंभ भी होगा।

मुख्यमंत्री को सौंपा जायेगा गोल्ड अवार्ड

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा आयोजित विक्रमोत्सव 2025 को एशिया के शासकीय समारोह की विशेष श्रेणी में गोल्ड अवार्ड डब्ल्यूओडब्ल्यू अवार्ड एशिया की टीम द्वारा माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को यह सम्मान भेंट किया जायेगा। भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान संस्कृति संचालनालय, वीर भारत न्यास, स्वराज संस्थान संचालनालय, माधवराव सप्रे समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान द्वारा भारत भवन, साहित्य अकादमी, मराठी साहित्य अकादमी, सिन्धी अकादमी, भोजपुरी अकादमी, उर्दू अकादमी, पंजाबी अकादमी, जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, निराला सृजनपीठ, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, एलएनसीटी विश्वविद्यालय, जागरण लेकसिटी विश्वविद्यालय, सेज विश्व विद्यालय, सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय, मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय, रबीन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय की सहभागिता में आयोजित किया जा रहा है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 14 सितंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

नेपाल में 5 मार्च को होंगे चुनाव, काठमांडू में कर्फ्यू

● मोदी ने सुशीला कार्की को प्रधानमंत्री बनने की दी बधाई ● काठमांडू के छह इलाकों में अभी दो महीने तक रहेगा कर्फ्यू

काठमांडू (एजेंसी)। पीएम मोदी ने शनिवार सुबह नेपाली, हिंदी और अंग्रेजी में सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए नेपाल की नई प्रधानमंत्री सुशीला कार्की को शुभकामनाएं दीं। मोदी ने कहा,नेपाल की अंतरिम सरकार की प्रधानमंत्री के रूप में पदभार ग्रहण करने पर सुशीला कार्की को हार्दिक बधाई। भारत नेपाल में अपने भाइयों और बहनों की शांति, प्रगति और समृद्धि के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। सुशीला कार्की ने शुक्रवार को नेपाल की पहली महिला अंतरिम पीएम पद की शपथ ली थी। उन्हें 5 मार्च, 2026 को संसदीय चुनाव कराने की जिम्मेदारी दी गई है। 6 दिनों की हिंसा के बाद

काठमांडू के कई इलाकों से कर्फ्यू हटा दिया गया है। वहीं, 6 जगहों पर अब भी कर्फ्यू जारी है।

यहां 5 से ज्यादा लोगों के इकट्ठा होने, भूख हड़ताल, धरना, घेराव, जुलूस और सभा करने पर रोक लगा दी गई है। नोटिस में कहा गया है कि यह आदेश दो महीने तक लागू रहेगा। कल राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने कल संसद भंग करने का भी ऐलान किया था। पूर्व पीएम केपी ओली की कम्युनिस्ट पार्टी ने इस फैसले का विरोध किया है। महासचिव शंकर पोखरेल ने पार्टी कार्यकर्ताओं से इसके खिलाफ सड़कों पर उतरने की अपील की है। वहीं, अन्य नेताओं ने इस सरकार में शामिल होने से इनकार कर दिया। उनका कहना है कि वे सरकार में शामिल नहीं होंगे, लेकिन सरकार के कामकाज की निगरानी करेंगे। भारत सरकार ने सुशीला कार्की की अंतरिम सरकार का स्वागत किया है।

आरएसएस से कभी जुदा नहीं हो सकती है भाजपा

● रिश्तों को रीसेट करने में जुटे पीएम मोदी और अमित शाह ● लोगों में एक सकारात्मक संदेश देने की हो रही है कोशिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। अखबारों में लेख में उनकी दिल्ली के सियासी गलियारों में हाल के दिनों एक बात की खूब चर्चा रही कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के शीर्ष नेतृत्व और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के बीच रिश्तों में तल्खी आ गई है। इसका सबसे बड़ा कारण है कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव बार-बार टालना। हालांकि अब परिस्थिति बदलती नजर आने लगी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त को लाल किले से अपने संबोधन के दौरान आरएसएस की प्रशंसा की थी। 11 वर्षों में पहली बार लाल किले से संघ की जिक्र हुआ था। प्रधानमंत्री ने गुरुवार को आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के जन्मदिन पर देश के विभिन्न खुलकर प्रशंसा की। वहीं, हाल ही में गृहमंत्री अमित शाह ने भी कहा कि आरएसएस से जुड़ा होना कोई माइनस पॉइंट नहीं है। भाजपा के दोनों शीर्ष नेताओं के बयान इस बात संकेत देते हैं कि बीजेपी अपने वैचारिक मूल संगठन से सहज रिश्तों को लेकर तस्वीर साफ करना चाहती है और लोगों में एक सकारात्मक संदेश देने की कोशिश कर रही है।

इस सबकी शुरुआत 2024 में बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा के उस बयान से होती है जब उन्होंने एक इंटरव्यू के दौरान कहा था कि भाजपा को अब आरएसएस पर पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है। भाजपा अध्यक्ष के इस बयान ने आरएसएस के कान खड़े कर दिए।

एशिया कप में आज भिड़ेंगे भारत और पाकिस्तान

● महामुकाबले के लिए दोनों टीमों ने कसी कमर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच एशिया कप में ग्रुप स्टेज का महामुकाबला कल 14 सितंबर को खेला जाएगा। टीम इंडिया ने यूएई के खिलाफ 9 विकेट की जीत से अपने अभियान की शुरुआत की। टूर्नामेंट इतिहास में

दोनों ने आपस में 18 मैच खेले। 10 में भारत और 6 में पाकिस्तान को जीत मिली। हालांकि, पिछले 10 साल में राइवलरी एकतरफा सी हो गई, जहां पाकिस्तान को 7 मुकाबलों में महज 1 बार जीत नसीब हो सकी। एशिया कप 1984 से खेला जा रहा है। भारत ने 8 और पाकिस्तान ने 2 खिताब जीते हैं, लेकिन दोनों टीमें कभी फाइनल में आमने-सामने नहीं हो सकीं। 1984 में पहली बार एशिया कप खेला गया, तब भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका ने ही हिस्सा लिया।

केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने पासपोर्ट सेवा केंद्र का किया शिलान्यास

मुरैना में समर्थकों की भीड़ बढ़ी तो भगाया कार्यकर्ताओं को गेट से बाहर निकाला

मुरैना (नप्र)। मुरैना में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने पुलिस के साथ कार्यकर्ताओं को गेट से बाहर किया। वो स्टेशन रोड स्थित डाकघर परिसर में पोस्ट ऑफिस पासपोर्ट सेवा केंद्र भवन का भूमिपूजन और शिलान्यास कार्यक्रम में पहुंचे थे। ज्योतिरादित्य सिंधिया समर्थक कार्यकर्ताओं की भीड़ अधिक हो गई और जहां पोस्ट ऑफिस परिसर में भूमिपूजन होना था, वहां जगह काफी कम थी।

पुलिस कार्यकर्ताओं को अंदर नहीं जाने दे रही थी। पुलिस को कार्यकर्ताओं को रोकने के लिए जोर आजमाइश करनी पड़ी। यह बात जब केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को पता चली तो वो खुद पुलिस कर्मियों की सहायता के लिए आगे आए और कार्यकर्ताओं को बाहर भगाया।

कार्यक्रम में सिंधिया के साथ प्रभारी मंत्री करण सिंह वर्मा और कृषि मंत्री एदल सिंह कंसाना भी पहुंचे। सिंधिया ने पोस्ट ऑफिस पासपोर्ट सेवा केंद्र भवन का भूमि पूजन और शिलान्यास किया।

प्रधानमंत्री सुकन्या योजना कार्यक्रम में हुए शामिल- इसके बाद केंद्रीय मंत्री सिंधिया जीवाजी गंज क्षेत्र के टाउन हॉल में आयोजित प्रधानमंत्री सुकन्या योजना कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम में जिले के जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी और विधायक भी मौजूद रहे। भाजपा कार्यकर्ताओं ने जगह-जगह पोस्टर लगाकर मंत्री का भव्य स्वागत किया। कार्यक्रमों में शामिल होने पर सिंधिया का जनता और कार्यकर्ताओं ने भी अभिवादन किया।

कैलारस कारखाने पर बोले- मिलकर हल निकालेंगे- केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कैलारस शक्कर कारखाने पर कहा कि सांसद शिवमंगल सिंह तोमर, कृषि मंत्री एदल सिंह कंसाना और राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा हम सब मिलकर इस समस्या का हल निकालेंगे। बता दें कि 19 अगस्त को मोहन कैबिनेट की बैठक में इस कारखाने को एमएसएमई को सौंपे जाने पर मुहर लगी थी।

युवती ने प्रेमी पर दर्ज कराया रेप केस

शादी का झांसा देकर पांच साल तक ज्यादती के आरोप

भोपाल (नप्र)। भोपाल के मिसरोद इलाके में किराए से रहने वाली युवती ने प्रेमी के खिलाफ रेप का केस दर्ज कराया है। आरोपी और पीड़िता के बीच पांच साल से संबंध थे। युवक ने शादी का भरोसा दिलाया था। अब आरोपी ने युवती का कॉल उठाना बंद कर दिया है। उससे हर तरह का संपर्क खत्म कर दिया है।

पीड़िता ने शादी के लिए दबाव बनाया तो आरोपी ने शादी करने से साफ इन्कार कर दिया है। तब पीड़िता ने शिकायती आवेदन दिया था। आवेदन की जांच के बाद मिसरोद पुलिस ने शुक्रवार देर रात एफआईआर दर्ज कर ली है। अब पुलिस आरोपी युवक की तलाश में जुटी हुई है। पुलिस का कहना है जल्द ही उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

2020 में युवक से हुई थी मुलाकात

पुलिस के मुताबिक 24 वर्षीय युवती नर्मदापुरम जिले की रहने वाली है। 2020 में युवती की मुलाकात एक कार्यक्रम में मनू सोनी नामक युवक से हुई थी। पहले दोनों के बीच फोन पर बातचीत हुई और फिर उसने मिलने के लिए एक होटल में बुलाया।

जहां उसने पीड़िता से शादी करने का झांसा देकर दुष्कर्म किया। इसके बाद से वह लगातार शोषण कर रहा था। अभी कुछ दिन पहले उसने शादी करने से इन्कार कर दिया। पीड़िता से हर तरह का संपर्क खत्म कर फरार हो गया।

वायुसेना ने की 114 नए राफेल विमान की डिमांड

● वह भी सिर्फ मेड इन इंडिया, मेगा प्रोजेक्ट की चर्चा शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय वायुसेना द्वारा 114 नए राफेल लड़ाकू विमानों की खरीद के लिए भेजे गए प्रस्ताव पर रक्षा मंत्रालय ने चर्चा शुरू कर दी है। इन विमानों का निर्माण फ्रांसीसी कंपनी डसॉल्ट एविएशन द्वारा भारतीय एयरोस्पेस कंपनियों की साझेदारी से भारत में ही किया जाएगा। सूत्रों के अनुसार, यह सौदा 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक का हो सकता है और इसमें 60 फीसदी से ज्यादा स्वदेशी सामग्री का इस्तेमाल होगा। पूरा होने पर यह भारत सरकार का अब तक का सबसे बड़ा रक्षा सौदा होगा।

मोदी ने सुशीला कार्की को प्रधानमंत्री बनने की दी बधाई

नेपाल में 5 मार्च को चुनाव होंगे, 6 इलाकों में दो महीने तक कर्फ्यू

काठमांडू (एजेंसी)। पीएम मोदी ने शनिवार सुबह नेपाली, हिंदी और अंग्रेजी में सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए नेपाल की नई प्रधानमंत्री सुशीला कार्की को शुभकामनाएं दीं। मोदी ने कहा,नेपाल की अंतरिम सरकार की प्रधानमंत्री के रूप में

पदभार ग्रहण करने पर सुशीला कार्की को हार्दिक बधाई। भारत नेपाल में अपने भाइयों और बहनों की शांति, प्रगति और समृद्धि के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। सुशीला कार्की ने शुक्रवार को नेपाल की पहली महिला अंतरिम पीएम पद की शपथ ली थी। उन्हें 5 मार्च, 2026 को संसदीय चुनाव कराने की जिम्मेदारी दी गई है। 6 दिनों की हिंसा के बाद काठमांडू के कई इलाकों से कर्फ्यू हटा दिया गया है। वहीं, 6 जगहों पर अब भी कर्फ्यू जारी है।

पाक के दक्षिणी वजीरिस्तान में टीटीपी का बड़ा हमला

सेना की बस को धमाके से उड़ाया 12 जवानों की हुई मौत

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के दक्षिणी वजीरिस्तान में बड़ा आतंकवादी हमला हुआ है। दक्षिणी वजीरिस्तान के बादर घाटी के अपर जिले में एक सैन्य काफिले पर भयानक हमला किया गया है, जिसमें कम से कम 12 सैनिकों की मौत हो गई और 4 गंभीर रूप से घायल हुए हैं। पाकिस्तानी

सेना ने इसकी पुष्टि की है और कहा कि घायल सैनिकों को तुरंत नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया। स्थानीय सुरक्षा बलों ने बताया है कि हमला बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से किया गया और ये हमला इतनी तेजी से किया गया था कि सैनिक तत्काल प्रतिक्रिया भी नहीं दे पाए। पाकिस्तानी तालिबान ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है।

भारत-चीन सीमा पर अब कैमरे बढ़ाएंगे भरोसा

● तनाव घटाने के इस नए फॉर्मूले पर आगे बढ़े दोनों देश

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्वी लद्दाख की बर्फीली चोटियों पर भारत और चीन के बीच तनातनी पूरी तरह थमी नहीं है। हालांकि, भारतीय सैनिक अब नए विश्वास-निर्माण उपायों और अत्याधुनिक निगरानी तंत्र पर भरोसा कर जमीनी तनाव घटाने की कोशिश कर रहे हैं।

2020 से चले आ रहे गतिरोध के बीच तकनीकी निगरानी ढांचे ने न केवल गश्ती दबाव कम किया है, बल्कि सीमावर्ती क्षेत्रों में टकराव की आशंका घटाने में भी मदद की है। सूत्रों के अनुसार, 2020 में जब पूर्वी लद्दाख में सैन्य गतिरोध शुरू हुआ था, तभी से भारत ने एलएसी और आसपास के क्षेत्रों पर चौबीसों घंटे नजर रखने के लिए एक व्यापक निगरानी नेटवर्क स्थापित किया है। इसे अतिरिक्त गश्त को कम करने के दीर्घकालिक उद्देश्य से लगातार उन्नत और मजबूत किया जा रहा है। वर्तमान में, भारतीय गश्ती दल नियमित अंतराल पर एलएसी पर नियंत्रण बनाए रखने और किसी भी असामान्य गतिविधि पर नजर रखने के लिए गश्त करते हैं। पिछले वर्ष अक्टूबर में हुए समझौते के बाद, दोनों पक्ष जमीनी स्तर पर

सैनिकों के बीच टकराव से बचने के लिए समन्वित गश्त कर रहे हैं। एक सूत्र ने कहा, लद्दाख की बर्फीली सर्दियां सैनिकों के लिए बड़ी संख्या में पैदल गश्त करना चुनौतीपूर्ण बना देती हैं। लगातार उन्नत और मजबूत किया जा रहा निगरानी ढांचा इस कठिनाई को कम करेगा और ठंड के कारण होने वाली हताहतों की संख्या घटाएगा। सूत्र ने यह भी बताया कि मजबूत आईएसआर ढांचा उन क्षेत्रों की निगरानी के लिए वर्तमान में भेजे जाने वाले गश्ती दलों के अलावा अतिरिक्त गश्त की आवश्यकता को भी घटाएगा, जिससे सैनिकों पर दबाव कम होगा।

एनडीए कार्यकर्ता सम्मेलन में '2025 फिर से नीतिश' का नारा

मधेपुरा (एजेंसी)। मधेपुरा के स्टेडियम में शनिवार को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का विधानसभा कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें सभी घटक दलों के हजारों कार्यकर्ता और समर्थक शामिल हुए और

एकजुटता का परिचय दिया। सम्मेलन में '2025 फिर से नीतिश' का नारा लगातार गूंजता रहा और कार्यकर्ताओं में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर उत्साह देखा गया। संभावित प्रत्याशी अपने-अपने समर्थकों के विशाल हुजूम के साथ स्टेडियम पहुंचे और माहौल को चुनावी रंग में रंग दिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बिहार सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार उपस्थित रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कार्यकर्ताओं को एकजुट होकर एनडीए के पक्ष में वोट देने की अपील की। मंत्री ने कहा कि पिछले 20 सालों से एनडीए की सरकार ने बिहार को विकास की नई दिशा दी है।

कर्नाटक में दर्दनाक हादसा 9 लोगों की मौत

● गणेश विसर्जन जुलूस में घुसा ट्रक, कुचलते हुए निकला

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के हासन जिले में शुक्रवार रात एक ट्रक ने गणेश विसर्जन जूलूस में शामिल लोगों को कुचल दिया। 9 लोगों की मौत हो गई, 20 लोग घायल हैं। घटना लगभग 8.45 बजे मोसाले होसाहल्ली गांव में हुई। पुलिस के मुताबिक, ज्यादातर मृतक युवा लड़के हैं। घायलों को अस्पताल में एडमिट कराया गया है। चश्मदीद ने बताया, ट्रक अरकलागुडु की तरफ से आ रहा था। जुलूस के नजदीक पहुंचते ही ट्रक का कंट्रोल खो गया और वह भीड़ को कुचलता हुआ निकल गया, लोग ट्रक के पहिए के नीचे आ गए। इधर पीएम मोदी ने हादसे में मरने वाले सभी मृतकों के परिजन को 2 लाख और घायलों को 50,000 रुपए देने की घोषणा की है।

सीएम थे सवार, हॉट एयर बैलून में लगी आग

● मंदसौर में तेज हवा से ट्रॉली झुकी, बाल-बाल बचे डॉ.मोहन यादव ● पायलट ने कहा-कपड़ा फायर प्रूफ, कलेक्टर बोलीं-ये हादसा नहीं

मंदसौर (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के गांधीसागर फॉरेस्ट रिट्रीट के पास हिंगलाज रिसोर्ट में नाइट हाल्ट के बाद शनिवार सुबह मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव हॉट बैलून में सवार हुए, लेकिन हवा की रफ्तार 20 किलोमीटर प्रतिघंटा होने से बैलून नहीं उड़ सका। इस दौरान उसके निचले हिस्से में आग लग गई, जिसे वहां मौजूद कर्मचारियों ने बुझाया। दूसरी ओर, सीएम डॉ. यादव जिस ट्रॉली में सवार थे, उसे सिक्योरिटी गार्ड्स ने संभाले रखा, जिससे डॉ. यादव सुरक्षित हैं। मुख्यमंत्री ने शुक्रवार शाम को गांधीसागर फॉरेस्ट रिट्रीट में गांधीसागर फेस्टीवल के चौथे संस्करण की शुरुआत की थी। रात में वे रिट्रीट के पास हिंगलाज

रिसोर्ट में ही रुके थे। उन्होंने क्रूज पर सवार होकर चंबल डैम के बैक वाटर एरिया घूमा। शनिवार सुबह वे रिट्रीट पहुंचे। यहां बोटिंग का लुत्फ उठाया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मंदसौर सांसद सुधीर गुप्ता के साथ हॉट एयर बैलून के रोमांचकारी सफर पर निकल रहे थे, लेकिन उस समय हवा की रफ्तार ज्यादा थी। इस वजह से बैलून उड़ नहीं सका। जब उसमें एयर भरी जा रही थी, वह नीचे झुक गया। जिससे निचले हिस्से में आग लग गई। इसके ठीक नीचे सीएम थे। इसके चलते सीएम सिक्योरिटी भी अलर्ट हुई और ट्रॉली को संभाले रखा। दूसरी ओर, एक्सपर्ट और कर्मचारियों ने आग को बुझाया। कलेक्टर अदिति गर्ग ने बयान जारी कर कहा कि एयर बैलून में सुरक्षा के संबंध में किसी तरह की कोई चूक नहीं हुई है। मुख्यमंत्री जी केवल एयर बैलून को देखने के लिए गए थे। हॉट एयर बैलून, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, गर्म हवा का गुब्बारा होता है। सुबह 6 से 7.30 बजे के बीच हवा की रफ्तार न के बराबर रहती है। हॉट एयर बैलून में हवा की रफ्तार जीरो होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री इंदौर में अखिल भारतीय बैठक में हुए शामिल

विक्रमादित्य भारतीय न्याय व्यवस्था के महान पुरोधा :मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय न्याय व्यवस्था का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है। सम्राट विक्रमादित्य भारतीय न्याय व्यवस्था के महान पुरोधा थे, जिनके निर्णयों की मिसाल आज भी दी जाती है। न्याय के क्षेत्र में उनकी पहचान विश्व स्तर पर अद्वितीय थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को इंदौर में विश्व हिंदू परिषद विधि प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित अखिल भारतीय बैठक को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत के अनेक कानूनों में समयानुकूल बदलाव किए गए हैं, जो समय की आवश्यकता भी थे। न्याय व्यवस्था में मन की पवित्रता और पंचों का निष्पक्ष निर्णय ही असली न्याय है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी भारतीय संस्कृति और न्याय परंपरा पर गर्व है और न्यायालयों के निर्णयों का सबको समान रूप से पालन करना चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में कानून व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। प्रदेश में कोलाहल नियंत्रण अधिनियम का कड़ाई से पालन कराया जा रहा है। साथ ही खुले में मांस विक्रय पर प्रतिबंध लगाया गया है और उसका भी सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कानून सबके लिए समान है और उसके साथ खिलवाड़ करने वालों को किसी भी परिस्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लव जिहाद के विषय में स्पष्ट कहा कि यह धार्मिक स्वतंत्रता और व्यक्ति की गरिमा के विरुद्ध है। प्रदेश में लव जिहाद करने वालों को छोड़ा नहीं जाएगा और उनके विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य है कि न्याय और कानून व्यवस्था में किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। समाज के प्रत्येक वर्ग को समान न्याय मिले और जनता को यह विश्वास रहे कि मध्यप्रदेश में कानून सर्वोपरि है।

कार्यक्रम को स्वामी श्री जितेंद्रानंद जी महाराज ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर केंद्रीय विधि और न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री अर्जुन राम मेघवाल, परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक जी, संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेंद्र जैन, राष्ट्रीय संयोजक विधि प्रकोष्ठ डॉ. अभिषेक अत्रे एवं विधि प्रकोष्ठ के संरक्षक न्यायमूर्ति श्री व्ही.एस. कोकजे विशेष रूप मौजूद थे।

समाज को अनुशासित करने में संत महात्माओं और मुनियों की महती भूमिका : मोहन यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि समाज को अनुशासित रखने में संत महात्माओं और मुनियों की महती भूमिका रही है। धर्म गुरुओं के संदेश, उपदेशों से भारतीय संस्कृति अक्षुण्ण है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को इंदौर में आयोजित जैन श्वेतांबर मालवा महासंघ के 14 वें अधिवेशन एवं श्रीसंघ मिलन समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस 17 सितंबर से प्रदेश में सेवा पखवाड़ा अभियान शुरू किया जा रहा है। अभियान सभी जिलों में विभिन्न गतिविधियाँ और कार्यक्रम आयोजित होंगे। उन्होंने सभी से अभियान में

सहभागिता का आहवान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में उद्योग विकास, निवेश और स्वरोजगार के अवसर बढ़ाए जा रहे हैं। गौमाताओं, गौशालाओं का संरक्षण, दुग्ध संघ के माध्यम से दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में बेहतर कार्य हुए हैं। इन सब प्रयासों से प्रदेश आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रहा है।

संघ मिलन समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आचार्य विश्वरत्न सागर का शुभाशीष प्राप्त किया। समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. यादव का मंगल कलश और शुभ अक्षतों की वर्षा कर स्वागत किया गया। इस दो दिवसीय समारोह में अन्य राज्यों व जिलों से धर्मावलंबी शामिल हुए। इस दौरान आचार्य विश्वरत्न सागर ने आशीष वचनों से उपस्थितजन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार के मुखिया अपने सरल, सहज और समन्वय भाव से प्रदेश को विकास की ओर ले जा रहे हैं। नए उद्योग और रोजगार, धार्मिक न्यास को लेकर प्रदेश में जो कार्य हुए है वे अतुल्यनीय है। सरकार ने जन हितैषी कार्यों बढ़ावा दिया है।

रोड शो के दौरान भाजपा प्रदेशाध्यक्ष की तबीयत बिगड़ी

बैतूल में जीप के दरवाजे में दबी दो उंगलियां, खून बहने लगा, चक्कर आ गए

बैतूल (नप्र)। बैतूल के आठनेर में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की स्वागत रैली के दौरान अचानक तबीयत बिगड़ गई। वाहन पर चढ़ते समय उनकी उंगली गाड़ी के गेट में दब गई। इससे दर्द के चलते उन्हें चक्कर आ गया। कार्यकर्ताओं ने डीजे बंद कर उन्हें निजी अस्पताल पहुंचाया।

हेमंत खंडेलवाल के साथ मौजूद जिला भाजपा उपाध्यक्ष कृष्णा गायकी ने बताया कि भीड़ के समय वे वाहन के गेट पर थे। तभी अचानक जीप का गेट बंद कर दिया गया, जिसमें प्रदेशाध्यक्ष की दो उंगलियां दब गई। इसके बाद उनसे खून आने लगा।

मैंने उन्हें देखा तो उनकी तबीयत कुछ बिगड़ी लगी, तभी उन्हें तुरंत निजी अस्पताल ले गए। जहां जांच में सब कुछ सामान्य पाया गया। एक्सरे में भी कोई समस्या नजर नहीं आई।भाजपा प्रदेशाध्यक्ष की तबीयत बिगड़ने पर कार्यकर्ताओं ने उन्हें पानी पिलाया।भाजपा प्रदेशाध्यक्ष खंडेलवाल को निजी अस्पताल ले जाया गया। यहां डॉक्टर ने उनकी जांच की।

डिस्चार्ज होने के बाद फिर से रोड शो किया

अस्पताल से डिस्चार्ज होते ही प्रदेशाध्यक्ष खंडेलवाल ने कार्यकर्ताओं के जोश और जनता के स्वागत को देखते हुए फिर से रोड शो में हिस्सा लिया। वे नगर में आयोजित सभी स्वागत समारोहों में उपस्थित रहे और लोगों का आभार व्यक्त किया।डिस्चार्ज होने के बाद वे फिर से रोड शो में शामिल हुए। कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया।

डॉक्टर ने दी आराम करने की सलाह

आठनेर बीएमओ डॉ. सचिन आहतकर ने बताया कि आज प्रदेशाध्यक्ष के दौरे के समय मौसम भी अनुकूल नहीं था, उन्हें अचानक चक्कर आ गया। इसके बाद उन्हें एक निजी अस्पताल में एडमिट किया गया। स्वास्थ्य विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची। जहां उनका उपचार किया गया। उन्हें आराम करने की सलाह दी है।

डॉक्टर बोले- उंगली में चोट के कारण चक्कर आया

डॉ. देवेंद्र चढ़ोकर ने प्राथमिक जांच के बाद बताया कि उनकी उंगली में चोट और तेज दर्द के कारण चक्कर आया। फिलहाल उनकी स्थिति पूरी तरह सामान्य है। उन्हें इसके बाद डिस्चार्ज कर दिया गया। बता दें कि, प्रदेशाध्यक्ष बनने के बाद खंडेलवाल पहली बार आठनेर पहुंचे थे। उनके स्वागत में नगरवासियों ने जगह-जगह पुष्पवर्षा, तुलादान और स्वागत समारोहों का आयोजन किया।

लाइव स्ट्रीमिंग पर जबलपुर हाई कोर्ट ने लगाई रोक

याचिकाकर्ता बोले- मिर्च-मसाला लगाकर प्रसारित किया जाता, यूट्यूब और मेटा को नोटिस

जबलपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने क्रिमिनल कोर्ट की लाइव स्ट्रीमिंग पर रोक लगा दी है। यह आदेश तब आया जब जबलपुर निवासी अरिहंत तिवारी और विदित शाह ने याचिका दायर कर शिकायत की कि कोर्ट कार्यवाही के वीडियो यूट्यूब और सोशल मीडिया पर अपलोड किए जा रहे हैं।

याचिकाकर्ताओं ने दलील दी कि इन वीडियो को तोड़-मरोड़कर पेश किया जाता है, जिससे कोर्ट की छवि धूमिल होती है। चीफ जस्टिस संजीव सचदेवा और जस्टिस विनय सराफ की डिवीजन बेंच ने शुक्रवार को मामले की सुनवाई की, इसे गंभीर माना और नोटिस जारी करते हुए अगली सुनवाई 25 सितंबर को निर्धारित की।

याचिका में उठाई आपत्ति- जबलपुर निवासी अरिहंत तिवारी और विदित शाह ने हाई कोर्ट में दायर याचिका में कहा कि क्रिमिनल मामलों की लाइव स्ट्रीमिंग के वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रसारित किए जा रहे हैं। कई बार इन्हें शॉर्ट वीडियो बनाकर यूट्यूब और इंस्टाग्राम पर डाला जाता है, जिनमें तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश किया जाता है। यह कोर्ट की अवमानना और न्यायपालिका की छवि धूमिल करने वाली है।

हाई कोर्ट का आदेश- मुख्य न्यायाधीश संजीव सचदेवा और जस्टिस विनय सराफ की डिवीजन बेंच ने शिकायत को गंभीरता से लेते हुए सभी क्रिमिनल कोर्ट की लाइव स्ट्रीमिंग पर अंतरिम रोक लगा दी है। कोर्ट ने इस मामले में हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल, रजिस्ट्रार आईटी, केंद्र सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, यूट्यूब और मेटा प्लेटफार्म के शिकायत अधिकारियों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है।

याचिकाकर्ताओं की दलील- याचिकाकर्ताओं का कहना है कि सोशल मीडिया पर डाले जा रहे ऐसे वीडियो न केवल भ्रामक हैं, बल्कि आम जनता के बीच न्यायिक बिरादरी की छवि को नुकसान पहुंचा रहे हैं। उन्होंने कोर्ट से मांग की कि रजिस्ट्रार आईटी को इस तरह की गतिविधियों की नियमित मॉनिटरिंग करने और सख्ती से रोक लगाने के निर्देश दिए जाएं।

माँ नर्मदा और देवी अहिल्या बाई का इंदौर से गहरा और अटूट संबंध : पटेल

108 नदियों के जल से लोकमाता देवी अहिल्या बाई की प्रतिमा का किया जलाभिषेक

भोपाल (नप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास एवं श्रम विभाग मंत्री श्री प्रहलाद पटेल ने शनिवार को इंदौर में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन और स्थानीय विधायक श्री गोलू शुक्ला के साथ इंदौर के राजवाड़ा स्थित लोकमाता देवी अहिल्या बाई की प्रतिमा का 108 नदियों के जल से अभिषेक किया। इस मौके पर मंत्री श्री पटेल ने कहा कि माँ नर्मदा और देवी अहिल्या का इंदौर से अटूट संबंध है। माँ नर्मदा मैया अत्यंत पावन है। तीस वर्ष पूर्व मैंने पहली बार माँ नर्मदा की परिक्रमा की थी। उसके बाद पत्नी श्रीमती पुष्पलता पटेल के साथ नर्मदा परिक्रमा की। नर्मदा परिक्रमा से प्राप्त अनुभव पर एक पुस्तक तैयार की गई है, जिसका लोकार्पण 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत के करकमलों से किया जायेगा।

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि बचपन से ही हमारे परिवार

का नर्मदा नदी के प्रति गहरी आस्था और लगाव रहा है। पिताजी कहा करते थे कि नदी के संगम को कभी भी पार नहीं करना चाहिये। मैंने इसका अक्षरशः पालन करने की कोशिश की। मुझे नदियों के उद्गम स्थल को देखने की जिज्ञासा रही और इसकी शुरूआत केन-बेतवा नदी के उद्गम स्थल को देखकर की। अभी तक मैंने 106 नदियों के उद्गम स्थलों को न सिर्फ देखा बल्कि वहां के जल को लेकर भी आया हूं। आज इन नदियों के जल से माता देवी अहिल्या की प्रतिमा का जलाभिषेक किया गया। इस मौके पर वैदिक विदवानों ने श्री नर्मदाष्टकम - त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे के मंत्रोच्चार के साथ उपस्थित नागरिकों ने भी जल एवं दूध से देवी अहिल्या की प्रतिमा का जलाभिषेक किया।

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान से जुड़ने का मुझे भी अवसर मिला। इस अभियान से हमें जल का महत्व समझ में आता है कि जीवन में जल कितना बहुमूल्य और उपयोगी है। सभी नदिया जीवनदायिनी है। हम उसके जल को सहेजे और उसकी रक्षा करें। कार्यक्रम में श्री पटेल की पत्नी श्रीमती पुष्पलता पटेल और भाई श्री जालिम सिंह पटेल सहित बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद थे।

62 किमी साइकिल चलाकर कदवाया पहुंचे अशोकनगर कलेक्टर

माता बिजासन मंदिर में दर्शन किए, ग्रामीणों से मुलाकात की

अशोकनगर (नप्र)। अशोकनगर जिले के कलेक्टर आदित्य सिंह एक बार फिर अपने अनोखे अंदाज़ में चर्चा में हैं। शनिवार सुबह उन्होंने अपने साथी के साथ साइकिल से 62 किलोमीटर की दूरी तय कर कदवाया गांव पहुंचे, जहां उन्होंने प्रसिद्ध माता बिजासन मंदिर में दर्शन कर जिले की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की।

यह कोई पहली बार नहीं है जब कलेक्टर आदित्य सिंह साइकिल पर ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा कर रहे हों। वह लगातार ऐसे प्रयास कर रहे हैं जिससे न सिर्फ प्रशासनिक कार्य बेहतर हो, बल्कि आमजन से सीधा संवाद भी स्थापित किया जा सके। साइकिल से यात्रा करने की वजह से वे रास्तों की स्थिति, विकास कार्यों की गति और जमीनी हालात को बारीकी से समझ पाते हैं।

माता बिजासन मंदिर में पूजन के बाद कलेक्टर ने स्थानीय लोगों से मुलाकात की और क्षेत्रवासियों ने उनके इस सादगीभरे और जनहितैषी प्रयास की सराहना की। कलेक्टर आदित्य सिंह के इस अनूठे कार्यशैली की सराहना केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी कर चुके हैं। हाल ही में उन्होंने एक कार्यक्रम के दौरान कहा था- आप लोगों के पास ऐसा कलेक्टर है जो कार से नहीं, बल्कि साइकिल से आपकी समस्याएं जानने खुद आपके बीच आता है। कलेक्टर सिंह के इस कदम को न केवल प्रशासनिक दृष्टिकोण से सराहा जा रहा है, बल्कि यह आम लोगों के साथ विश्वास और संवाद की मजबूत कड़ी भी बनता जा रहा है।

ओबीसी आरक्षण पर भोपाल में अधिवक्ताओं की बैठक

13 प्रतिशत पदों को होल्ड किए जाने का मुद्दा उठा, महाधिवक्ता ने पद अनहोल्ड करने का सुझाव मांगा

भोपाल (नप्र)। ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने को लेकर भोपाल में महाधिवक्ता प्रशांत सिंह की मौजूदगी में बुलाई गई बैठक में 13 प्रतिशत पदों को होल्ड किए जाने का मामला सबसे अधिक उठा। इस मामले में महाधिवक्ता ओबीसी महासभा और 27 प्रतिशत आरक्षण संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक के बाद सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता वरुण ठाकुर ने कहा कि सरकार यह कह रही है कि हम 27 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए प्रतिबद्ध हैं लेकिन पीएससी की परीक्षा के जरिए होने वाली भर्ती में वर्ष 2019 से जो 13 प्रतिशत पद

की मांग कर रहे याचिकाकर्ताओं के वकीलों को संतुष्ट नहीं कर सके।

महाधिवक्ता ने कहा कि ऐसा होने पर दूसरे पक्ष के लोग कोर्ट चले जाएंगे और पूरा मामला फिर लटक जाएगा। हालांकि पूरी बैठक के दौरान उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा साफ है। सरकार 27 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए तैयार है। राजधानी के एक होटल में शनिवार को ओबीसी आरक्षण को लेकर बुलाई गई बैठक दो घंटे तक चली जिसमें सुप्रीम कोर्ट के वकील वरुण ठाकुर, रामेश्वर ठाकुर समेत ओबीसी वर्ग के अन्य अधिवक्ताओं, ओबीसी महासभा और ओबीसी वर्ग को आरक्षण दिलाने की लड़ाई लड़ रहे होल्ड किए जा रहे हैं, उन पदों को अनहोल्ड नहीं किया जा रहा है जबकि सुप्रीम कोर्ट भी साफ कर चुका है कि आपको हमारे पास आने की जरूरत नहीं है।

ठाकुर ने कहा कि कल ही पीएससी के रिजल्ट आए हैं, उसमें भी 13 प्रतिशत पद होल्ड रखे गए हैं जबकि सरकार 23 सितम्बर से सुप्रीम कोर्ट में इसको लेकर लगातार होने वाली सुनवाई में सभी वर्गों को साथ लेने के लिए बैठक बुला रही है। इसको लेकर सीएम निवास और दिल्ली में दो दौर की बैठक हो चुकी है और आज यह तीसरी बैठक थी जिसमें कोई सार्थक जवाब नहीं आया है।

महाधिवक्ता ने सबको साधने का दिया है आश्वासन

बैठक में शामिल अधिवक्ताओं ने बताया कि सबकी बात सुनने के बाद महाधिवक्ता प्रशांत सिंह ने कहा है कि सरकार सही फैसला करेगी। उन्होंने कहा कि इस बात के लिए सभी सहमति दें कि सुप्रीम कोर्ट में सभी सरकार के साथ ओबीसी आरक्षण पर पक्ष रखेंगे क्योंकि सरकार 27 प्रतिशत आरक्षण देना चाहती है। इसके लिए बैठक में शामिल अधिवक्ताओं और प्रतिनिधियों से हाथ उठवाकर सहमति ली गई।

13 प्रतिशत पद अनहोल्ड करने मांगा सुझाव

बैठक में महाधिवक्ता प्रशांत सिंह ने 13 प्रतिशत पद अनहोल्ड किए जाने को लेकर सभी अधिवक्ताओं से लिखित में सुझाव मांगे हैं, ताकि बाकी लोग कोर्ट न जा सकें और कोर्ट जाएं तो सरकार उस पर अपना पक्ष मजबूती से रख सके। इसके आधार पर वे मुख्यमंत्री से चर्चा के बाद निर्णय लिया जाएगा। अधिवक्ताओं ने कहा है कि 52 प्रतिशत ओबीसी वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण दिलाने के लिए वे जल्दी ही महाधिवक्ता को ड्राफ्ट बनाकर सुझाव भी देंगे। संभव है इसको लेकर अभी एक और मीटिंग महाधिवक्ता बुलाएंगे।

लाडली बहनों को 1250 रुपए देने पर दिग्विजय सिंह ने उठाए सवाल

क्या ये पैसा इनके मामा के घर से आता है, प्राइवेट स्कूल में शिक्षा दिला पाना संभव है

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने भाजपा सरकार की लाडली बहना योजना पर सवाल खड़े किए हैं। सिंह ने कहा कि 1250 रुपए की राशि से महिलाएं अपने परिजनों का प्राइवेट अस्पतालों में इलाज नहीं करवा सकतीं, न ही अच्छे सरकारी स्कूलों के अभाव में बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में पढ़ा सकती हैं और न ही बिजली के बिल का भुगतान कर सकती हैं। उन्होंने लिखा कि क्या ये पैसा इनके मामा के घर से आता है?

दिग्विजय सिंह ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा 1.26 करोड़ लाडली बहनों के खाते में 1250 रुपए भेजने के अगले दिन शनिवार सुबह एक्स (ट्विटर) पर यह प्रतिक्रिया दी। उन्होंने अपने ट्वीट में लिखा लाडली बहनों को 1250 रुपए देकर मचाया जाने वाला शोर कई प्रश्न खड़े करता है। पूर्व सीएम ने सवाल उठाया कि जब महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की बात होती है तो सरकार क्यों उन्हें स्थायी रोजगार और अच्छा वेतनमान देने के बजाय सिर्फ सहायता राशि तक सीमित रख रही है। उन्होंने संघ प्रमुख मोहन भागवत के उस बयान का भी जिक्र किया जिसमें तीन संतानों को जन्म देने की बात कही गई थी और सवाल किया कि सरकार इसे क्यों अनदेखा कर रही है। अपने ट्वीट के अंत में दिग्विजय सिंह ने हैशटैग के पहले सुशील सिंह, अंजना सिंह जबलपुर भी लिखा है, जिससे राजनीतिक हलकों में अलग-अलग कयास लगाए जा रहे हैं।

क्या ये पैसा इनके मामा के घर से आता है?

- क्या महंगी शिक्षा, महंगी स्वास्थ सेवाओं, महंगे दूध और पौष्टिक आहार के वर्तमान दौर में 1250 रुपए महीना ऊंट के मुंह में जीरा नहीं है?
- क्या भागवत साहब ने लाडली बहनों को तीन संतानों को जन्म देने का आह्वान नहीं किया है?
- क्या 1250 रुपए महीना में लाडली बहनें सरकारी अंग्रेजी स्कूलों के अभाव में महंगे प्राइवेट स्कूलों में तीन संतानों को पढ़ाकर इंजीनियर और डॉक्टर बना सकती हैं?
- क्या बीमार पड़ने पर 1250 रुपए महीना में सरकारी अस्पताल के अभाव में महंगे प्राइवेट अस्पताल में इलाज करा सकती हैं?
- क्या 1250 रुपए महीना में तीन संतानों को दूध और पौष्टिक आहार देकर कुपोषण का शिकार होने से बचा सकती हैं?
- क्या बिजली बिल का मासिक भुगतान कर सकती हैं?

हिंदी: आत्मसम्मान की पहचान है

हिंदी दिवस विशेष
अर्चना नायडू
लेखिका साहित्यकार हैं।

किसी भी भाषा का अस्तित्व ,उसका माधुर्य ,सम्प्रेषण और रचित संसार से हीसिद्ध होता है। हर भाषा अपने आप में अद्वितीय है,अनोखी है। भाषा कीउन्नति और वैभव का प्रभाव वहां के जनमानस द्वारा बोले जाने वाले संवादों और बातों से ही स्थापित होताहै । इसी श्रेणी में राजभाषा हिंदी अपने विचारो और संवादों केसम्प्रेषण के गहनता कारण लम्बे समय से सृजक संवाहक बनी हुई है इसी लिएहिंदी को राष्ट का गौरव कहा जाता है।

आज समय का प्रवाह तेजी से बदल कर परिवर्तन चाह रहा है।मगर हमारी जड़े हमारे पैरों तले है। क्योकि जड़ो को काट कर कोई भी भाषा उन्नतिनहीं कर सकती,इसीलिए हमारी भाषा की मजबूत जड़े है इसीलिए हिंदी और उसकीसहोदरी भाषायें ,जन -जन की संपर्क भाषा बन कर लोगो के बीच शाखाओं का कामकर रही है। इन सारी भाषाओ में दबाव या मज़बूरी से मुक्त सामंजस्य स्थापितहोना नितांत आवश्यक है। इन्हें तार्किक धारा से पर सरल मन से सहज रूपमें स्वीकार करना ही समझदारी होगी क्योकि जब - जब हम हमारी प्रांतीय,क्षेत्रीय,प्रादेशिक भाषा को सम्मान देंगे,तब तब हम स्वयं सम्मानित होंगे।

हमारी हिंदी भाषा हम भारतीयों की प्रथम पहचान है। यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि आज के वैश्विक काल में हिंदी भाषा अपने पूर्ण यौवन के साथ संपूर्ण विश्व में राज कर रही है।हर भाषा का अपना स्वयं का अस्तित्व होता है। हर भाषा मिठास से भरी बोली होती है।परिवर्तन की इस बयार से हिंदी भाषा भी प्रभावित हो रही है ।आजअभिव्यक्तियों के नए मापदंड स्थापित किए जा रहे है। साथ ही हिंदी भाषा भीपहले से ज्यादा उन्मुक्त ,और परिमार्जित हो गई है। हिंदी केमहामात्य पर विवेचना करने से बेहतर है कि उसके बढ़ते -घटते प्रभाव परचिंतन किया जाए। यूँ तो हिंदी भाषा बोलचाल की भाषा के रूप अपनी सार्वजनिक सत्ता के साथ सर्वमान्य और सार्वभौमिक है।वही हिंदी और देश की अन्य क्षेत्रीय भाषाएं एक - दूसरे के पूरक है। आज जनमानस में हिंदीको राष्ट के सम्मान के रूप में जाना जा रहा है।जो हमारे सम्प्रेषण और संभाषण का सशक्तमाध्यम है ।आज खड़ी बोली और देवनागरी हिंदी भाषा सरल और सहज ग्राही होने के कारण बोलचाल की प्रथम भाषा बन गई है।

हमारी हिंदी भाषा हमेशा से ही समृद्ध शाली रही है ।हिंदी के बढ़ते प्रभाव के कारण हमारा हिंदी साहित्य भी विश्व में अपना वर्चस्व स्थापित कर चुका है।कहा जाता है कि हिंदी साहित्य लेखन हमेशा स्वप्रेरणा से लिखा जाता है। क्योकि ' स्वजन हिताय- -स्वजन सुखाय-' की भावना ही लेखन का मूल आधार है। इसीलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि हिंदी के बढ़ते चरण के साथ हिंदी लेखन भी अपनी ऊंचाइयों को छू रहा है।हिंदी लेखन और सृजन किसी रचनाकार की कल्पना शीलता और साधना का पुण्य फल होता है.कुछ रचनाकार अपने स्वयंभू प्रतिभा से प्रकाशित होते है। इतिहास के पन्ने कहते है कि कलम हमेशा तलवार से तेज होती है ।शायद इसलिए कि सतत सृजन जीवन का सकारात्मक पहलु है और तलवार विनाश का परिचायक है। लेखन का इतिहास उतना ही पुराना है जितना इंसान का विकास ।

पत्थरों पर उकेरे गए अभिलेख और पेड़ो के छालों पर लिखे गए लेख वर्षो बाद आज भी अपनी - अपनी कहानी बता रहे है। आज कागज़ - कलम से लेकर कंप्यूटर के बोर्ड पर भी लेखन - सृजन सतत चल रहा है ।हिंदी भाषा के प्रभावी अलंकारिक चमत्कारिक भाषा समृद्धता के कारण यह हर रचनाकार को आकर्षित करती रही है।रचनाकार के पास अगर भाव है,संवेदना है ,शैली है और सुंदर कल्पनाशीलता है तो वह बहुत कुछ रच सकता है । रस,छंद ,अलंकार, समास,अनुप्रास और उपमाओं के अंतहीन खजाने के उपयोग से कुछ भी असंभव नही । आज दृश्य श्रव्य की आधुनिक तकनीकी का तेजी से विकास हो रहे है। इन्टरनेट,डिजिटल दुनिया,और वेब क्रांति के कारण सब कुछ मिनटों में उपलब्ध हो रहा है। कलम कागज़ की दोस्ती अब मोबाइल, कंप्यूटर के की बोर्ड से हो गई है फिर भी रचनाकार का लेखन के प्रति समर्पण और उसकी सुंदर सोच को कोई भी बदल नही सकता ।समय के साथ बहुत कुछ बदल गया है.महाग्रंथ ,महाकाव्य के विराट रूप बदलते गए फिर कहानियों का ,कविताओं का लम्बा दौर चला ।आज आधुनिकता के विस्तार और व्यस्ततम जीवन शैली ने लघु साहित्य लेखन के वामन देवता का रूप धारण कर लिया है।आधुनिक, समकालीन हिंदी अपने सामाजिक ,साहित्यिक और मानवीय संवेदनशील परिस्थिति का परिणाम है।जिसमे समाज में हो रहे परिवर्तन का करुण चिंतन है,एक आक्रोश भाव है और कोरी कल्पना से परे हिंदी के आभूषणी श्रृंगारिक शब्दों का अभाव है ।हिंदी के लेखक अपने भोगे हुए यथार्थ को कलमबद्ध करे में रूचि रखने लगे है।

आज नये - नये प्रयोगों पर बहुत कुछ लिखा जा रहा है।सामाजिक चिंतन के साथ रहस्यवाद की और दर्शन के नए - नए प्रयोगों का भी स्वागत किया जा है।आज अंग्रेजी को प्रगतिशील का मापदंड मानने वाले अल्पज्ञानी हिंदी भाषा को कमतर आंकने की भूल कर रहे है। ' जैक एंड जिल' को प्राथमिकता देने वाली मनोवृति ने भू भुवस्य- की गरिमा को भूला दिया है।हिंदी पढ़ने और लिखने वालों की कमी नहीं है। पर आंखों में छाए ऐसे अंधियारे को छंटने में समय लग सकता है।पर उजाला अवश्य होगा।आज हिंदी भाषा पहले समय के संघर्ष की अपेक्षा अभी सरल हो रही है ।आज अभिव्यक्ति के नये मापदंड स्थापित हो रहे है।साथ ही भाषा भी उन्मुक्त और स्वछंद होती जा रही है।हिंदी भाषा के घिसे पिटे फार्मूले से परे नये प्रयोगों का स्वागत किया जा रहा है । भारत में हिंदी का भाषाई इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना जाता है।सामान्यत- प्राकृत की अंतिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिंदी का आविर्भाव स्वीकार किया गया है।उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं - आठवीं शताब्दी से ही पद्य रचना आरम्भ हो गई थी। हिंदी भाषा और साहित्य के जानकार अपभ्रंश की अंतिम अवस्था 'अवहट्ट ' से ही हिंदी का उद्भव स्वीकार करते है।चंद्रधर शर्मा ' गुलेरी ' ने इसी अवहट्ट को ' पुरानी हिंदी' नाम दिया था।विद्यापति कवि ने इसे हिंदी न कहकर 'देशी भाषा' कहा है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपनी किताब 'हिंदी शब्द सागर' की भूमिका के रूप में हिंदी विषय पर लिखा है,जिसे 1929 में गहन शोध और चिंतन के बाद हिंदी और हिंदी साहित्य के पूरे इतिहास पर विहंगम दृष्टि डाली है।कहा जाता है कि 'हिंदी ' शब्द का प्रयोग विदेशी मुसलमानों ने किया था।इस शब्द से उनका तात्पर्य ' भारतीय भाषा' था। डॉ धीरेन्द्र वर्मा ने हिंदी भाषा का उदगम 1000 ई पूर्व माना है।उनके अनुसार हिंदी भाषा का विकास काल प्राचीन काल 1500 तक मध्य काल (ब्रज, अवधी, खड़ी बोली) और आधुनिक काल खड़ी बोली(साहित्यिक भाषा)के रूप में छा गई है। हर व्यक्ति और उसके व्यक्तित्व की पहचान उसकी भाषा से ही ज्ञात होती है। हर भाषा अपने देश ,काल ,परिवेश और परिस्थिति से प्रभावितहोती है। बहुत से देशज और प्रांतीय भाषा के माधुर्य को प्रकट किया जा रहा है। भाषा की शुद्धता और सरसता का कविता और लेखों के माध्यम से नए प्रयोग किए जा रहे है।वैश्वीकरण के इस दौर में हिंदी भाषा भी वैश्वीकृत होती जा रही है। हरभाषा अपनी माटी से जुडी होती है। उसका यह जुड़ाव गर्भनाल की तरह होताहै। कहा जाता है की हमारी भाषा ही हमारीचरित्रावली लिखता है। आज हिंदी भाषा कोअपना स्वाभिमान मानने उसके नए मापदंड स्थापित करने में लगे है और हिंदी को अपनी संस्कृति सेजोड़कर खुश हो रहे है। मगर आज हमारी संस्कृति स्वयं आयातित संस्कृति सेग्रसित है। ऐसे में हिंदी भाषा और संस्कृति की शुद्धता पर प्रश्न चिन्ह लगाए जा रहे हैं। जिस बोली को सुनकर हमारी अनुभूतियाँ महकती थी, जिनसे रचनाशीलता की गहनता और अभिव्यक्ति कीसहजता रेखांकित होती थी। उम्मीद की प्रखर किरणें आज के बुद्धिजीवी वर्ग से एक नए भोर की आशा करती है।जिसमें लोगों की मानसिकता बदले और विदेशी भाषाओं के प्रति मोहभंग हो। हमारी संस्कृति की जड़े बहुत मजबूत है।इसीलिए हमारी हिंदी भाषा हमारे व्यक्तित्व का दर्पण माना जाता रहा है। हमारा स्वभाव और सदव्यवहार हमारी भाषा से ही प्रकट होता है।विनम्रता और शालीनता हमारी भाषा से झलकती है। इसीलिए हमारी भाषा ही हमारे जीवन का परिचायक है।

2030 तक दुनिया का हर पांचवां व्यक्ति बोलेगा हिंदी

हिंदी दिवस विशेष
प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी
लेखक माखलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विवि में प्राध्यापक हैं।

भाषा संवाद संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। मनुष्य को इसलिए भी परमात्मा की श्रेष्ठ कृति कहा जाता है कि वह भाषा का उपयोग कर अपने भावों को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। यही विशेषता है, जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न करती है।

हिंदी एक बहुआयामी भाषा है। यह बात इसके प्रयोग क्षेत्र के विस्तार को देखते हुए भी समझी जा सकती है। यह अलग बात है कि हिंदी भाषा की बात करते समय हम सामान्यतः हिंदी साहित्य की बात करने लगते हैं। इसमें संदेह नहीं कि साहित्यिक हिंदी, हिंदी के विभिन्न आयामों में से एक है, लेकिन यह केवल हिंदी के एक बड़े मानचित्र का छोटा-सा हिस्सा है, शेष आयामों पर कम विचार हुआ है और व्यावहारिक हिंदी की पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए तो और भी कम विमर्श हमारे सामने हैं। यदि हिंदी भाषा के आंतरिक इतिहास का उद्घाटन करना हो तो नामकरण ही उसका आधार बन सकता है। हिंदी, हिंदवी, हिन्दुई और दकिनी के विकास क्रम में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि अलग-अलग समय में एक ही भाषा के भिन्न नाम प्रचलित रहे हैं। हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। यह करीब 11वीं शताब्दी से ही राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। उस समय भले ही राजकीय कार्य संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी में होते रहे हों, लेकिन संपूर्ण राष्ट्र में आपसी संपर्क, संवाद, संचार, विचार, विमर्श, जीवन और व्यवहार का माध्यम हिंदी ही रही है।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से ही संपूर्ण राष्ट्र से सम्पर्क किया और सफलता हासिल की। इसी कारण आजादी के पश्चात संविधान-सभा द्वारा बहुमत से 'हिंदी' को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय किया था। जैसे-जैसे भाषा का विस्तार क्षेत्र बढ़ता जाता है, वो भाषा उतने ही अलग-अलग रूप में विकसित होना शुरू हो जाती है, यही हिंदी भाषा के साथ हुआ, क्योंकि यह भाषा पहले केवल बोलचाल की भाषा तक ही सीमित थी। उसके बाद साहित्यिक भाषा के क्षेत्र में इसे जगह मिली, और फिर समाचार-पत्रों मेंझ 'हिंदी पत्रकारिता' का विकास हुआ। अपनी अनवरत यात्रा के कारण स्वतन्त्रता के बाद हिंदी, भारत की राजभाषा घोषित की गई तथा उसका प्रयोग कार्यालयों में होने लगा और हिंदी का एक राजभाषा का रूप विकसित हुआ।

अगर हम आंकड़ों में हिंदी की बात करें तो 260 से ज्यादा विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। 64 करोड़ लोगों की हिंदी मातृभाषा है। 24 करोड़ लोगों की दूसरी और 42 करोड़ लोगों की तीसरी भाषा हिंदी है। इस धरती पर 1 अरब 30 करोड़ लोग हिंदी बोलने और समझने में सक्षम हैं। 2030 तक दुनिया का हर पांचवा व्यक्ति हिंदी बोलेगा। यूएई और फिजी जैसे देशों में हिंदी को तीसरी राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हिंदी की देवनागरी लिपि वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में 18 हजार शब्द हिंदी के शामिल हुए हैं, और सबसे बड़ी बात कि जो तीन साल पहले अंग्रेजी इंटरनेट की सबसे बड़ी भाषा थी, अब हिंदी ने उसे पीछे छोड़ दिया है। गूगल सर्वेक्षण बताता है कि इंटरनेट पर डिजिटल दुनिया में हिंदी सबसे बड़ी भाषा है।

अक्सर ये प्रश्न पूछा जाता है कि हिंदी ही हमारी राजभाषा क्यों? इसका जवाब बहुत पहले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दिया था। महात्मा गांधी ने किसी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिये जाने के लिए तीन लक्षण बताए थे। पहला कि वो भाषा आसान होनी चाहिए। दूसरा प्रयोग करने वालों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए। और तीसरा उस भाषा को बोलने वालो की संख्या अधिक होनी चाहिए। अगर ये तीनों लक्षण किसी भाषा में थे, हैं और रहेंगे, तो वो सिर्फ हिंदी भाषा ही है। आज भाषा को लेकर संवेदनशील और गंभीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। इस सवाल पर भी सोचना चाहिए कि क्या अंग्रेजी का कद कम करके ही हिंदी का गौरव बढ़ाया जा सकता है? जो हिंदी कबीर, तुलसी, रैदास, नानक, जायसी और मीरा के भजनों से होती हुई प्रेमचंद, प्रसाद, पंत और निराला को बांधती हुई, भारतेंदु हरिशचंद्र तक सरिता की भांति कलकल बहती रही, आज उसके मार्ग में अटकले क्यों हैं?

यदि हम सच में चाहते हैं कि हिंदी भाषा का प्रभुत्व राजभाषा के रूप मेंझ बना रहे, तो हमें इसके प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना होगा। सरकारी कामकाज में हिंदी को प्राथमिकता देनी होगी। ऐसे में भरोसा फिर उन्हीं नौजवानों का करना होगा, जो एक नए भारत के निर्माण के लिए तैयार हैं। जो अपनी जड़ों की ओर लौटना चाहते हैं। भरोसे और आत्मविश्वास से दमकते ऐसे तमाम चेहरों का इंतजार भारत कर रहा है। ऐसे चेहरे, जो भारत की बात भारत की भाषाओं में करेंगे। जो अंग्रेजी में दक्ष होंगे, किंतु अपनी भाषाओं को लेकर गर्व से भरे होंगे। उनमें 'एचएमटी' यानी 'हिंदी मीडियम टाइप' या 'वर्नाकुलर पर्सन' कहे जाने पर हीनता पैदा नहीं होगी, बल्कि वे अपनी भाषा से और अपने काम से लोगों का और दुनिया का भरोसा जीतेंगे। हिंदी और भारतीय भाषाओं के इस समय में देश ऐसे युवाओं का इंतजार कर है, जो अपनी भारतीयता को उसकी भाषा, उसकी परंपरा, उसकी संस्कृति के साथ समग्रता में स्वीकार करेंगे। जिनके लिए परंपरा और संस्कृति एक बोझ नहीं, बल्कि गौरव का कारण होगी। यह नौजवानी आज कई क्षेत्रों में सक्रिय दिखती है। खासकर सूचना-प्रौद्योगिकी की दुनिया में। जिन्होंने इस भ्रम को तोड़ दिया, कि सूचना-प्रौद्योगिकी की दुनिया में बिना अंग्रेजी के गुजारा नहीं है। ये लोग ही हमें भरोसा जगा रहे हैं। ये भारत को भी जगा रहे हैं। आज भरोसा जगाते ऐसे कई दृश्य हैं, जिनके श्रीमुख और कलम से व्यक्त होती हिंदी देश की ताकत है।

हिन्दी के देश में हिन्दी दिवस

व्यंग
सुरेश रायकवार

कभी मूर्ख दिवस तो कभी ज्ञान दिवस कभी किसी बीमारी का दिवस तो कभी स्वास्थ्य दिवस ऐसे ही कभी दाद दिवस तो कभी खाज दिवस आज फ्लाना दिवस तो कल ढिकाना दिवस अर्थात हर दिन कोई ना कोई दिवस तो होता ही है। कभी.कभी तो एक ही दिन में दर्जनभर दिवस आ जाते है। कुल मिलाकर हम लोग वर्ष के 365 दिन में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिवसों को मिलाकर एकाध हजार दिवस तो मना ही लेते होंगे। इन्ही हजारों दिवस में एक दिवस हिन्दी दिवस भी है।

हमारे देश में कहा जाता है कि कोस कोस पर पानी बदले चार कोस पर वाणी। देश में इतनी भाषाएँ है कि गिनती मुश्किल है। इन ढेर सारी भाषाओं में से हमारी हिन्दी.भाषा कितनी भाग्यशाली है कि सरकार द्वारा 14 सितम्बर का पूरा का पूरा दिन उसके नाम कर दिया गया। हिन्दी की यह उपलब्धि बिलकुल वैसी है जैसे मंहगाई से त्रस्त कर्मचारियों को सरकार डीए की एक किश्त जारी कर दे या कुलीन लोगों के क्रिकेट.खेल की राष्ट्रीय टीम में किसी निर्धन का चयन हो जाए। इसे आप अपनी हिन्दी का जुझारूपन भी कह सकते है क्योंकि अँग्रेजी साम्राज्य से मुक्ति के बाद भी सरकारी कामकाज में अँग्रेजी का वर्चस्व रहने के बावजूद 14 सितम्बर को उसने अपने लिए दिवस घोषित करवा ही लिया।

हमे गर्व होना चाहिए कि अँग्रेजी भले ही सरकारों की कामकाजी भाषा हो किन्तु राजभाषा का दर्जा तो हमारी हिन्दी को ही प्राप्त है ना। गर्व तो हमे इस पर भी करना चाहिए कि नेताओं के बच्चे भले ही प्रायवेट कान्वेंट स्कूल में पढ़ते हों किन्तु देश के हर सरकारी स्कूल में जनता जनार्दन को तो हिन्दी माध्यम से ही शिक्षा दी जाती है।

देश में कानून की भाषा हो या चिकित्सकों की उच्च शिक्षा कीए या पारिजात वर्ग की सब जगह भले ही अँग्रेजी का बोलबाला हो किन्तु गर्व का विषय यह होना चाहिए कि देश में सबसे अधिक 44: लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा अब भी हमारी हिन्दी ही है। हमें इस बात से भी बिलकुल निराश नहीं होना चाहिए कि नौकरियों में अँग्रेजी बोलने वालों का चयन आसानी से होता है। हमे संतुष्टि तो इस बात की भी है कि बॉलीवुड के कलाकार अपने साक्षात्कार के दौरान हिन्दी में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर चाहे अँग्रेजी में देते हों किन्तु आसमान पर बैठे ये तथाकथित सितारों को फिल्मी पर्दे पर तो हिन्दी ही बोलना पड़ती है।

हम और हमारी हिन्दी दोनों कितने सहिष्णु और उदार है इसका उदाहरण गत वर्ष संसद में देखने को मिला था जब एक देशी अंग्रेज़ सांसद ने सदन में देश के पूरे हिन्दी क्षेत्र को ही गोबर की संज्ञा दे डाली थी किन्तु हम यह मानते हैं कि उनके इस बयान से हिन्दी या हिन्दीभाषियों का कोई अपमान नहीं हुआ था बल्कि उनके दिमाग में भरे गोबर का ही खुलासा हुआ था।

दयारामजी की पदस्थी एक सरकारी कार्यालय में हिन्दी.अधिकारी के रूप में है और वे पुराने जमाने के हिन्दी मीडियम के पढे.लिखे व्यक्ति है,उन्हे अँग्रेजी का कार्यसाधक ज्ञान उतना ही है जितना उनके कान्वेंट स्कूलों में अग्रेंज़ी पढे सहकर्मियों को हिन्दी का।दयारामजी हिन्दी अधिकारी के रूप में हिन्दी.भाषा के विकास के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य करते है। जैसे कार्यालय में कितने पत्र हिन्दी में लिखे गए कितने अँग्रेजी में हिन्दी पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया गया है अथवा नहीं कार्यालय में उपयोग आने वाली सीलें हिन्दी में बनी हैं या नहीं। इसके अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह कि वर्ष में एक बार 14 सितम्बर के आसपास हिन्दी.सप्ताह का आयोजन करवाना जिसमे कार्यालय के स्टाफकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए उनके चाय.नाश्ते की व्यवस्था करना, हिन्दी.सप्ताह से संबन्धित समाचार सभी अखबारों में प्रकाशित करवाना भी हिन्दी अधिकारी होने के नाते उन्ही का दायित्व होता है। इन सब कार्यकलापों का विधिवत रिकॉर्ड रखना और हिन्दी पत्र.व्यवहार की यह जानकारी निर्धारित प्रारूप में मासिकए त्रेमासिक और वार्षिक रिपोर्टिंग सरकार को भिजवाना उनकी विशेष ज़िम्मेदारी है, ताकि सरकार देश की जनता को बता सके की वह हिन्दी के विकास के लिए कितनी गंभीरता से प्रयासरत है। उनके इस रिकॉर्ड का वार्षिक निरीक्षण भी एक उच्चस्तरीय संसदीय समिति द्वारा किया जाता है जिसके कुछ सदस्य तो अनपढ़ या केवल साक्षर होते है और कुछ हमारे देश के कान्वेंटी अंग्रेज़। निरीक्षिण के दौरान इस समिति की आवभगत और भेंटपूजा की सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी दयारामजी के कंधों पर ही होती है।

दयाराम जी प्रायः अपने सहकर्मियों को चीन, जापानए जर्मनी, अमेरिका या फ़िजी और इस्राइल,नेपाल के उदाहरण देते हुए कहा करते हैं कि किसी भी देश कोए चाहे वह छोटा हो या बड़ा एक सूत्र में बांधने के लिए उसकी अपनी भाषा होना आवश्यक है। फिर निराशा में कहते हैं कि हमारा ही एक अनोखा देश है जिसे हिन्दी दिवस मनाते हुए 76 वर्ष हो गए है किन्तु भाषा की परतंत्रता आज भी वैसी की वैसी है।

वैसे तो दयारामजी बतौर हिन्दी अधिकारी हमारी हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने का वास्तविक सम्मान दिलवाने के लिए पूर्ण समर्पित हैं किन्तु उन्हे खाली समय में हिन्दी किताब की मदद से अँग्रेजी सीखते हुए और अँग्रेजी बोलने का अभ्यास करते हुए भी देखा जा सकता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

हिंदी के लिए आशा का दिनकर जरूर उगेगा

हिंदी दिवस पर विशेष
नलिन खोईवाल
लेखक स्तंभकार हैं।

हिन्दी हमारी राजभाषा है और राष्ट्रभाषा बनने की द्वार-देहरी पर दस्तक दे रही है।राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है क्योंकि हिन्दी ही सरल,सहज,सौम्य और सुमधुर भाषा है तथा राष्ट्रीय एकता, प्रेम, सभ्यता, संस्कृति, समृद्धि और विनम्रता की प्रतीक है, किंतु अंग्रेजी भाषा रौब व गुलामी की सूचक है। अगर हम भारत को एक सूत्र में पिरोना चाहते हैं तो हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। अंग्रेजी बेशक अंतरराष्ट्रीय भाषा है, किंतु वह हमारी राजभाषा और राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती है।

राष्ट्रीय एकता को लेकर भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन ने कहा था कि हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए एक सुंदर हार का सृजन करेगी। स्वतंत्र भारत की भाषा हिन्दी ही होनी चाहिए, क्योंकि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी ही देश की एकता और अखंडता को स्थिर रख सकती है। हिन्दी बड़ी बहन है, जबकि सारी क्षेत्रीय भाषाएं उसकी छोटी बहनें हैं। यदि हमें सुख-शांति से परिवार चलाना है तो छोटी बहनों को भी साथ में लेकर चलना होगा। साथ ही छोटी बहनों को भी चाहिए कि वे शीर्ष पर विराजित बड़ी बहन का भी सम्मान करें। हिन्दी एक वटवृक्ष है व समस्त क्षेत्रीय भाषाएं उसकी शाखाएं हैं और शाखाओं के बिना एक वट वृक्ष प्राणविहीन ही तो है।

14 जनवरी, 1949 को संविधान की धारा 343 (ए) के तहत हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया था। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि हिन्दी भाषी प्रदेश में होते हुए भी हमें राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार व उसके उत्थान हेतु हिन्दी सप्ताह मनाने की आवश्यकता पड़ रही है। हिंदुस्तानी अंग्रेजी बोलने में अपनी शान समझते हैं। दिवंगत व्यंग्यकार शरद जोशी ने ठीक ही कहा है- हम हिंदुस्तानी जमीन से जरा ऊपर उठे नहीं कि अंग्रेजी बोलने लगते हैं।

इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि छिहत्तर वर्षों बाद भी राजभाषा हिन्दी का स्थापत्य कितना है ? ढाक के वो ही तीन पात... हम जहां से चले थे 76 वर्षों बाद भी हम वहीं आकर पानी के बुलबुले की तरह ठहरे हुए है। सुबह से हो गई शाम फिर भी चले वो ही अढ़ाई कोस। जब तक हम हिन्दी को उसके पैरों पर चलना नहीं सिखाएंगे, तब तक वह बैसाखियों के सहारे ही चलती रहेगी।

हिन्दी को उत्कृष्ट भाषा न मानकर इसे आम जनता की भाषा मानें। भारत की 75 प्रतिशत जनता गांवों में निवास करती है तथा बामुश्किल 2 प्रतिशत जनता ही टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल पाती है। सर्वोच्च पदों पर आसीन हमारे हुक्मरान स्वयं हिन्दी नहीं जानते फिर हम किससे उम्मीद कर रखें। हमारे नेताद्वय स्वयं अंग्रेजी में भाषण देते हैं। यह हमारा दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है ? कितने आश्चर्य की बात है कि हमारे नेता ग्रामीण विकास पर निरक्षरों को भाषण भी अंग्रेजी में देते हैं। ग्रामीणों को समझ में आए या नहीं, तालियां व वाहवाही अवश्य लूटने का प्रयास करते हैं। ऐसे में कैसे होगा हिन्दी का उत्कर्ष ? भारतीय चुनाव आचार संहिता में यह प्रावधान होना चाहिए कि वे ही व्यक्ति चुनाव लड़ सकेंगे जिन्हें हिन्दी आती है या वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने व उसे सीखने की अंतर्मन से अभिलाषा रखते हों। आज विदेशी कंपनियों का भारत में खुला आमंत्रण हमें स्वतंत्रता से परतंत्रता की ओर ही ले जाएगा। जब तक हम हिन्दी के प्रति पनपी अपनी हीन मानसिकता में परिवर्तन नहीं लाएंगे तब तक कितनी भी हीरक जयंती मना लें, हिन्दी का भला होने वाला नहीं है। एक रूसी साहित्यकार ने राजधानी दिल्ली में अंग्रेजीमय वातावरण देख कर व्यंग्य किया था कि यहां का वातावरण देख कर ऐसा लगता है कि ये भारत की राजधानी नहीं वरन् इंग्लैंड की राजधानी है।

आज आजादी के 78 वर्षों बाद भी हिन्दी का उत्थान उतना नहीं हो पाया जितनी हमें उम्मीद थी। इसके लिए हम स्वयं दोषी हैं, वरना आज हमें हिन्दी सप्ताह मनाने की आवश्यकता ही क्यों पड़ती? हमें यह समझ लेना चाहिए कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो कि हमारी राष्ट्रीय एकता को चिर स्थायी रख सकती है, अन्य कोई भाषा नहीं।अतः आज हमारी पहली आवश्यकता है हिन्दी को महत्व देकर उसे शिखर तक पहुंचाने की।

इसके लिए जरूरी है समस्त कार्यालयों में शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में हो। समस्त परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी हो तथा अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाए। तभी हम हिन्दी के परिधान धारण कर अंग्रेजी का चोला उतार फेकेंगे।छिहत्तर वर्षों में राजभाषा हिन्दी ने संघर्ष कर अपने दम पर ही वैश्वीकरण की ओर कदम बढ़ाए है और आज वह अपने चरमोत्कर्ष पर है।एक दिन अवश्य ही आशा का दिनकर उगेगा और हिंदी के जीवन में नया सवेरा उदित होगा।और...वह दिन हम हिंदी भाषियों के लिए किसी उत्सव से कम नहीं होगा।क्योंकि हमें हिंदीमय होकर के हिंदी को जीवन का एक उत्सव बनाना है।अब हिंदी को ही हमें जीना है,ओढ़ना है,बिछाना है और इसका परचम समूचे विश्व में फहराना है।क्योंकि आज हिंदी वैश्विक भाषा बनने को आतुर है।

भावनाओं और संस्कृति की संवाहिका है हिन्दी

हिंदी दिवस पर विशेष

लोकेन्द्र सिंह
लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं।

एक सामान्य उदाहरण हम सब देते ही हैं कि हिन्दी में आत्मीय रिश्तों को अभिव्यक्त/संबोधित करने के लिए अनेक शब्द हैं, जो संबंधित व्यक्ति के साथ हमारे रिश्ते को स्पष्ट रूप से बताते हैं। जैसेः- चाचा-चाची, ताऊ-ताई, मौसा-मौसी, मामा-मामी इत्यादि रिश्तों की अपनी विशिष्टता है, जो इन शब्दों से पता चलती है। अंग्रेजी में इन सबके लिए एक ही संबोधन है- अंकल और आंटी। अंग्रेजी में अंकल-आंटी कहने से पता नहीं चलता कि सामने वाले चाचा-चाची हैं या मामा-मामी। अंग्रेजी तो ढंग से गुरु और शिक्षक में भी अंतर नहीं कर सकती।

हिन्दी विश्व की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक है। हिन्दी के पास अपना विशाल शब्दकोश है, जिसमें सभी भारतीय भाषाओं के अनूठे शब्द हैं। बोलियां भी हिन्दी के शब्दकोश और सौंदर्य में वृद्धि करती हैं। अपने सर्वसमावेशी स्वभाव के चलते हिन्दी ने बाहरी भाषाओं के शब्दों को भी अपने आँचल में स्थान दिया है, जिससे हिन्दी का शब्द भंडार और अधिक समृद्ध हुआ है। हिन्दी की एक और सबसे बड़ी विशेषता है कि इसके शब्दकोश में अलग-अलग भाव, स्थिति, संबंध को व्यक्त करने के लिए एक ही शब्द के पर्यायवाची शब्द भी हैं। यह विशेषता अन्य भारतीय भाषाओं में भी है। परंतु, जिस अंग्रेजी को वैश्विक भाषा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, उसके पास यह सामर्थ्य नहीं है। इस मामले में अंग्रेजी हमारी हिन्दी के पासंग भी नहीं ठहरती है।

एक सामान्य उदाहरण हम सब देते ही हैं कि हिन्दी में आत्मीय रिश्तों को अभिव्यक्त/संबोधित करने के लिए अनेक शब्द हैं, जो संबंधित व्यक्ति के साथ हमारे रिश्ते को स्पष्ट रूप से बताते हैं। जैसेः- चाचा-चाची, ताऊ-ताई, मौसा-मौसी, मामा-मामी इत्यादि रिश्तों की अपनी विशिष्टता है, जो इन शब्दों से पता चलती है। अंग्रेजी में इन सबके लिए एक ही संबोधन है- अंकल और आंटी। अंग्रेजी में अंकल-आंटी कहने से पता नहीं चलता कि सामने वाले चाचा-चाची हैं या मामा-मामी। अंग्रेजी तो ढंग से गुरु और शिक्षक में भी अंतर नहीं कर सकती।

अन्य शब्दों के संदर्भ में भी हम हिन्दी-अंग्रेजी के इस अंतर को देख सकते हैं। हिन्दी में पानी के कई पर्यायवाची शब्द हैं- जल, नीर, तोय, अमृत, पय, सलिल आदि। जबकि अंग्रेजी में केवल 'वॉटर' शब्द ही प्रचलित है। अब यहां यह भी समझने की बात है कि पानी का प्रत्येक पर्यायवाची अगल भाव और स्थिति को बताता है। हम आम बोल-चाल में पानी शब्द का उपयोग करते हैं- एक गिलास पानी दीजिये, पौधों में पानी दे दो, नल में पानी आ गया इत्यादि। लेकिन जब हम धार्मिक अनुष्ठान में बैठे हैं और पूजन की दृष्टि से पानी की आवश्यकता है तब हम कभी नहीं कहते कि एक लौटा पानी दे दो। उस समय हमारे मुंह से यही निकलता है कि ÷एक लौटे या कलश में जल दे दीजिए÷। भारत का पोषण करने वाली माँ गंगा में भी पानी नहीं, जल प्रवाहित होता है। वैज्ञानिक संदर्भ में जल का उपयोग किया जाता है। वहीं, नीर का प्रयोग शुद्ध, स्वच्छ और निर्मल पानी के लिए किया जाता है। तालाब और झील का पानी 'तोय' है। बहता हुआ पानी 'सलिल' है और वर्षा जल को कहते हैं 'वारि'।

इसी प्रकार आग के स्वभाव और कार्य के आधार उसका नामकरण है। पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन, धार्मिक अनुष्ठान और साहित्यिक प्रयोग में यह अग्नि है। लेकिन जब यह भड़क उठती तो 'ज्वाला' बन जाती है। क्रोध को अभिव्यक्त करने के लिए भी 'ज्वाला' शब्द का प्रयोग होता है। जंगल की आग 'दावानल' और समुद्र के भीतर आग लगी हो तो 'बड़वानल' है। अनल शब्द का उपयोग उस आग को दर्शाने के लिए किया जाता है जो अपनी शक्ति और निरंतरता के लिए जानी जाती है, जिसका जलना कठिन होता है। यह शब्द आम बोलचाल के शब्द 'आग' की तुलना में अधिक साहित्यिक और काव्यमय माना जाता है। इसका प्रयोग अकसर कविताओं, गीतों और औपचारिक भाषा में किया जाता है। जरा आसमान की ओर देखिये, वहां चमक रहे सूर्य के लिए अंग्रेजी में केवल 'सन' है लेकिन हिन्दी में सूर्य, रवि, भानु, आदित्य और दिनकर भी है। चंद्रमा को तो हम आत्मीयता से मामा भी कह देते हैं। देवता के रूप में हम 'सोम' कहते हैं। पूर्णिमा की रात के ईश्वर के रूप यह 'राकेश' हो जाता है। जब कविता लिखनी हो तो मयंक, विधु, चांद और चंद्र का उपयोग अधिक करते हैं। खरगोश के आकार का धब्बा दिखने के कारण यह 'शशि' और 'शशांक' भी कहलाता है। ग्रहण के समय 'चंद्र' होगा।

उपरोक्त उदाहरणों से ध्यान आता है कि अंग्रेज़ी में एक अर्थ के लिए सीमित शब्द होते हैं, लेकिन हिन्दी में शब्दों की बहुलता इसे अधिक लचीला और भावपूर्ण बनाती है। यही कारण है कि हिन्दी साहित्य में कवि और लेखक अलग-अलग शब्दों का चयन करके अपने भावों की गहराई व्यक्त करते हैं। हम जानते हैं कि भाषा के विकास में संस्कृति का अत्यधिक महत्व रहता है। संस्कृति के खाद-पानी से ही भाषा पल्लवित-पुष्पित होती है। उसका सौंदर्य समृद्ध होता है। हिन्दी और अंग्रेजी की कुछ कहावतों में हम इस अंतर को देख सकते हैं। जहां हिन्दी की कहावतें रचनात्मक और सकारात्मक दृष्टिकोण देती हैं, वहीं उन्हीं संदर्भ में अंग्रेजी की कहावतों में नकारात्मक पुट है। जैसे- हम किसी के बारे में चर्चा कर रहे हैं और वह अचानक से हमारे सामने आ जाये तो हम कहते हैं कि आपकी उम्र बहुत लंबी है। हम आपको ही याद कर रहे थे और आप आ गए । वहीं, इसी परिस्थिति के लिए अंग्रेजी में कहावत है- थिंक ऑफ डेविल, डेविल इज हियर अर्थात शैतान का नाम लिया, शैतान हाजिर। मतलब हम अपने मित्र/परिचित को शैतान के रूप में देखते हैं क्या? जब हम एक साथ दो काम साधते हैं तो उसके लिए सुंदर कहावत है- 'एक पंथ-दो काज'। वहीं, अंग्रेजी में कहते हैं- 'टू किल टू बर्ड्स विथ वन स्टोन' और 'वन एरो, टू स्पैरो'। अंग्रेजी की कहावत में हिंसक दृष्टि है। हम ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखते हैं और उसकी भूमिका को सृजनात्मक रूप में देखते हैं। हिन्दी का कवि लिखता है- 'होई सोई जो राम रची राखा'। वहीं, अंग्रेजी में कहा गया है- 'मैन प्रोपोसेज़, गॉड डिस्पोसेज'। दोनों कहावतें जीवन में नियति और ईश्वर की इच्छा की भूमिका को दर्शाती हैं, लेकिन दोनों की सांस्कृतिक और भावार्थिक व्याख्या में बहुत बड़ा अंतर दिखाई देता है।

फ्रेंच की 'एलीट' पहचान को पीछे धकेलकर भले ही अंग्रेजी इंग्लैंड में महारानी बन गयी हो लेकिन भारत में वह हिन्दी की जगह नहीं ले सकती। शब्दकोश के मामले में अंग्रेजी की दरिद्रता भारत में साफ दिखाई देती है। भारत की बातों, परंपरा, व्यवहार और चीजों के लिए अंग्रेजी के पास उपयुक्त शब्द ही नहीं है। धर्म को अभिव्यक्त कर सके, ऐसा कोई शब्द अंग्रेजी के पास नहीं है। 'पाप' की कल्पना तो अंग्रेजी ने कर ली क्योंकि ईसाईयत का मत है कि मनुष्य की उत्पत्ति पाप से हुई है लेकिन अंग्रेजी के पास 'पुण्य' के लिए कोई उपयुक्त शब्द नहीं है। हम 'अमृतस्य पुत्र' हैं। मोक्ष की कल्पना भी अंग्रेजी में नहीं है। आत्मज्ञान, किंकर्तव्यविमूढ़, अंतर्ध्यान, नमस्कार और प्रणाम के आगे अंग्रेजी नतमस्तक है। उसके पास घी, रोटी, चटनी का विकल्प भी नहीं है। एक लंबी सूची है, जहां अंग्रेजी के कदम ठिठक जाते हैं।

इस लेख में हमने अंग्रेजी को कमतर दिखाने का प्रयास नहीं किया है अपितु हिन्दी की शब्द संपदा की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। चूंकि अंग्रेजी की भाव-भूमि अलग है और हिन्दी के उद्गम का स्रोत अलग, इसलिए भारत की बातों को हिन्दी ही सही अर्थों में अभिव्यक्त कर सकती है, अंग्रेजी नहीं। हम सदैव स्मरण रखें कि हिन्दी केवल संवाद का माध्यम नहीं बल्कि भावनाओं, संस्कृति और ज्ञान की संवाहिका है। इसकी शब्द-संपदा हमें गर्व और समृद्धि का अनुभव कराती है।

हिन्दी विश्व की प्रगतिशील भाषा है

हिंदी दिवस विशेष

डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला
लेखक साहित्यकार हैं।

हिन्दी को साहित्यकारों ने उतनी मजबूती नहीं दी, जितनी आम भारतीय नागरिकों ने दी है। उन्होंनें बोलचाल की हिन्दी को आसमान छूने जितनी ताकत भी दी, नये से नये शब्दों को हिन्दी में प्रवेश भी कराया। ये शब्द अनेक भारतीय भाषाओं और बोलियों-उपबोलियों के भी थे, और विदेशी भी। इस काम के लिये उन्हें न तो भाषाशास्त्रियों की राय लेनी पड़ी, न राजनेताओं का मुँह देखना पड़ा। उससे भी बड़ी बात यह कि हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों ने उन शब्दों का उपयोग दिल खोलकर अपनी कहानियों, गीत-कविताओं और उपन्यासों में किया। आज हिन्दी समृद्ध है, तो लोक के कारण और लोगों के प्यार के कारण।

यह बताने की अब कोई जरूरत नहीं कि हिन्दी का चारों तरफ बोलबाला है। पूरब-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण में हिन्दी बड़े चाव से बोली जा रही है, समझी जा रही है। अंग्रेजी पर निर्भर रहना बहुत कम हो गया है। भले ही राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी और दक्षिण भारतीयों के दबाव के रहते हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर पाना सम्भव नहीं हुआ, लेकिन सबके दिलों परझ हिन्दी ही राज कर रही है। हिन्दी को साहित्यकारों ने उतनी मजबूती नहीं दी, जितनी आम भारतीय नागरिकों ने दी है। उन्होंनें बोलचाल की हिन्दी को आसमान छूने जितनी ताकत भी दी, नये से नये शब्दों को हिन्दी में प्रवेश भी कराया। ये शब्द अनेक भारतीय भाषाओं और बोलियों-उपबोलियों के भी थे, और विदेशी भी। इस काम के लिये उन्हें न तो भाषाशास्त्रियों की राय लेनी पड़ी, न राजनेताओं का मुँह देखना पड़ा। उससे भी बड़ी बात यह कि हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों ने उन शब्दों का उपयोग दिल खोलकर अपनी कहानियों, गीत-कविताओं और उपन्यासों में किया। आज हिन्दी समृद्ध है, तो लोक के कारण और लोगों के प्यार के कारण।

लेकिन यह आधा सच है। शिक्षा माफियाओं ने अपनी दुकानें चलाते रहने के लिये अंग्रेजी माध्यम का मोह नहीं छोड़ा है। नई शिक्षा नीति को लागू करने की जिम्मेदारी जिन पर हैं, उनमें अभी तक यह साहस नहीं जागा, कि वे मातृभाषा में शिक्षा दिये जाने को सख्ती से अनिवार्य करें। ऊपर से नीचे तक के स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही है, और अभी सुदूर भविष्य में भी अंग्रेजी को ही पूजते रहने की परिस्थितियाँ बनी हुई हैं।

बच्चा पहली बार स्कूल में प्रवेश लेने के साथ स्कूल छोड़ने तक हिन्दी को हिकारत की दृष्टि से देखने के लिये बाध्य किया जाता रहेगा, तो हिन्दी के साथ न्याय होगा कैसे? हिन्दी जैसी समृद्ध भाषा को अंधेरे में धकेलते रहने का काम स्कूलों में बहुत पहले से चल रहा है। मैं इस काम को अपराध की श्रेणी में मानता हूँ, लेकिन सियासत चुप है, भाषाशास्त्री चुप हैं, शिक्षानीति बनाने वाले चुप हैं, इसलिये जो चल रहा है, उसे ही उचित मान लेने की विवशता में हम सभी फँसे हुए हैं।

ये तो हुआ शिक्षा जगत का आलम। भारतीय न्यायपालिका ने अंग्रेजों के जमाने में अंग्रेजी का जो हाथ कस कर पकड़ लिया था, वह किसी कीमत पर अब छूटता नहीं। न्यायिक फैसले अब भी अंग्रेजी में ही आते है। छोटे और बड़े वकीलों के घर और आफिस मोटे-मोटे अंग्रेज़ी ग्रंथों से सजे रहते हैं। कचहरी में वे पैरवी भले ही हिन्दी में कर लेते हों, लेकिन न्यायिक फैसलों को समझने के लिये तो आम आदमी को अंग्रेजी के जानकार वकील की जरूरत पड़ती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 348 (1)(ए) के अनुसार आज भी सर्वोच्च न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्रवाई अंग्रेजी भाषा में ही होती है। किसी भी कोर्ट में चले जाइए, ऐसा लगता है कि हम अंग्रेजों के जमाने में पहुँच गये हैं। फैसले सरल भाषा में क्यों नहीं सुनाये जा सकते, भले ही वह हिन्दी हो, या कोई सी भारतीय भाषा। जब न्यायपालिका ही हिन्दी के साथ न्याय करने पर विचार नहीं कर सकती, तो फिर कौन करेगा?

क्या यह विडम्बना नहीं कि भारतीय संविधान का मूलपाठ अंग्रेजी में है, और ज्यादातर उसीसे काम चलाया जाता है। मूलपाठ का अनुवाद जरूर हिन्दी में किया गया, लेकिन अनुवाद आखिर अनुवाद ही है। स्वतंत्र भारत के इठहत्तर वर्षों के बाद हिन्दी स्वयं को अनुवाद की भाषा के रूप में खड़ी हुई देख कर कैसा अनुभव करती होगी, इसकी पड़ताल करने वाला भी कोई नहीं है। इतने वर्षों बाद भी संविधान में हिन्दी दोयम दर्जे की भाषा बनी हुई है, यह देखकर हमें अफसोस क्यों नहीं होता? देश स्वाधीन होनें के बाद हमारे देश के कर्णधार संविधान का मूलपाठ हिन्दी भाषा में लिखवाते, तो आज हिन्दी आधिकारिक रूप से संविधान की भाषा होती, और उसका मान-मर्दन करने का साहस किसी में नहीं होता।

कमोबेश यही स्थिति सभी क्षेत्रों में दिखाई देती है। रेल्वे विभाग ने राजभाषा को सम्मान देने के अलग से प्रकोष्ठ तो जरूर बना रखा है, लेकिन उसके कामकाज में अंग्रेजी का ही वर्चस्व है। कभी-कभी तो लगता है, अंग्रेज ही हमारी रेल चला रहे हैं। रेल्वे में हिन्दी अनुवाद की भाषा है। वहाँ अपनाये गये तकनीकी शब्द इतने जटिल होते हैं कि वे जबान पर नहीं चढ़ पाते। चिकित्सा के क्षेत्र में तो अंग्रेजी ने ऐसे पाँव जमा रखे है, कि उन्हें कोई माई का लाल उखाड़ नहीं सकता। अभी कुछ बरस पहले शासन ने फरमान जारी किया था कि डॉक्टर पर्ची पर दवाइयाँ हिन्दी में ही लिखे, लेकिन यह फरमान अनसुना और अनदेखा रह गया। गम्भीर रोगी को अपने रोग की गम्भीरता का पता लगाने के लिये अंग्रेजी की शरण लेना पड़ती है, यह कितने दुर्भाग्य की बात है।

हिन्दीप्रेमी इस बात से खुश हो सकते है कि हिन्दी में बेहतरीन फिल्में बन रही हैं। वे खुश हो सकते है कि हिन्दी फिल्मों के मशहूर गानों का जादू हिन्दीभाषी और गैर-हिन्दीभाषी लोगों के सिर यर चढ़कर बोल रहा है। हिन्दीप्रेमी गर्व कर सकते हैं कि हिन्दी भाषा के साहित्य ने दुनिया में तहलका मचा रखा है। लेकिन हमें यह भी याद रखना होगा कि 1947 से लेकर लगातार अब तक हिन्दी का संघर्ष थमा नहीं है। कहना तो यह भी चाहिए कि स्वतंत्रता मिलने से पहले कम से कम हिन्दी तो आजाद थी। देश को आजाद कराने के लिये हमने हिन्दी को ही आगे किया था। स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी जानते थे कि हिन्दी ही क्रान्ति की भाषा हो सकती है, आत्मविश्वास की भाषा हो सकती है। देश आजाद होने के बाद हमने इस यथार्थ को भुला दिया, जिसका दुष्परिणाम हम अब तक भोग रहे हैं।

जिस तरह संसद में हिन्दी का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ा है, उसी तरह न्यायपालिका, कार्यपालिका, चिकित्सा-सेवा और रेल्वे के साथ-साथ सभी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का समुचित प्रयोग होने लगे, तो न केवल हिन्दी के स्वाभिमान की रक्षा होगी, अपितु उसके राष्ट्रीय स्वभाव को भी उचित यश और सम्मान मिलेगा। हिन्दी विश्व की प्रगतिशील भाषा है, वह राष्ट्रीय सम्मान की अधिकारिणी भी है।

विश्व स्तर की भाषा हिंदी कब बनेगी राष्ट्रभाषा

हिंदी दिवस पर विशेष

देवेन्द्रसिंह सिसौदिया
लेखक साहित्यकार हैं।

हिंदी, आज विश्व स्तर की भाषा बन चुकी है । दुनिया में कोई भी ऐसा देश नहीं है जहां हिंदी समझी नहीं जाती हो । दुनिया के 200 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है । आज हिंदी देश की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है वहीं विश्व के लगभग 18.5 प्रति शत लोग हिंदी बोलते हैं । हिंदी केवल भारत में ही नहीं बोली जाती बल्कि पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, म्यानमार, मलेशिया, यू.के, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, और सऊदी अरब में बहुतायत बोली जाती है ।

मदर इंडिया, मधुमति, गाइड, आम्रपाली, सलाम बॉम्बे, लगान, थी इडियट, सारांश, गांधी को नामांकित की गई तो फिल्म 'सल्म डॉग' को ऑस्कर के 8 पुरस्कार मिले ।

आज विश्व के हर कोने में हिंदुस्तानी बसते है । कई देशों में तो पुरी की पुरी कॉलोनी हिंदुस्तानियों की है और यहाँ के वासी हिंदी में ही वार्तालाप करते है । जब वहाँ जाते है तो ऐसा लगता ही नहीं है कि हम हमारे देश से हजारों किमी दूर है । यहाँ का बाज़ार, रेस्तराँ, क्लब आदि सभी दूर हिंदी बोली जाती है । इन देशों के दूतावासों में तो स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम भी हिंदी में ही संपन्न होते है । कई देशों में तो हिंदी पत्र - पत्रिकाएं भी नियमित रुप से प्रकाशित होती है ।

देखा जाए तो हिंदी विश्व स्तर की भाषा बन गई है इसके चरण दुनिया के हर कोने में पढ़ चुके है । यदि हिंदी दुनिया भर में अपना वर्चस्व जमा चुकी है तो फिर चुनौति क्या है ? क्या चुनौती देश के अंदर है ? हाँ बिलकुल सही सोच रहे है आप हिंदी को किसी

बाहरी तत्वों से चुनौती नहीं मिल रही है, इस देश के अंदर ही चुनौती मिल रही है । यदि चुनौती नहीं होती तो आज हम राष्ट्रभाषा दिवस मनाते न कि हिंदी दिवस । जिस प्रकार की गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस मनाते है । कहने में अफसोस होता है कि देश को आजाद हुए 78 वर्ष हो चुके है किंतु आज तक हम हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव नहीं दिला पाए है । हमारा राष्ट्रीय ध्वज है, राष्ट्रीय गान है, राष्ट्रीय गीत है, राष्ट्रीय पक्षी है यहां तक कि राष्ट्रीय पशु भी पर राष्ट्रभाषा नहीं ? चिंतनीय प्रश्न है ।

यह विचारणीय है कि हिंदी इतनी प्रिय क्यों हुई ? क्योंकि हिंदी सबसे सरल, सर्व ग्राही वैज्ञानिक व शाश्वत मूल्यों की भाषा है । इसमें इतना लचीलापन है कि ये अन्य भाषा के शब्दों को आत्मसात करते हुए नदी की तरह आगे बहते चली जाती है । एक यही भाषा है जो इतनी समृद्ध है कि एक शब्द के सैकड़ों पर्यायवाची शब्द मिल जाते है । और हर शब्द का भावनात्मक अर्थ होता है ।

दुनिया के लगभग 400 इस्कॉन मंदिरों में जब 'हरे रामा-हरे रामा, राम-राम हरे हरे, हरे कृष्ण-हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे'। की धून बजती है तो लोग झूम उठते है । ये धून केवल भारत या हिन्दी भाषी देशों में ही नहीं बजती बल्कि यूरोपीय देशों के अलावा अफ्रीकन और खाड़ी देशों में भी उसी भाव से सुनी और गायी जाती है । हिंदी को विश्व स्तर पर पहुँचाने में ऐसी संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान है ।

हिंदी फिल्मों के नायक राज कपूर की फिल्में नीलकमल, अनाड़ी, आवारा, श्री 420, मेरा नाम जोकर, बॉबी, संगम, कल आज और कल, और सत्यम शिवम सुंदरम जब विदेशों में तहलका मचाती है तो उसका मूल कारण हिंदी भाषा है । ये फिल्में केवल मनोरंजन ही नहीं करती थी बल्कि रूस और जापान के लोगों को हिंदी भी सिखाती है । वहां के लोगों ने केवल इन फिल्मों को देखा ही नहीं अपितु इनके माध्यम से उन्होंने हिंदी भी सीखी । जब उनके मुँह से इन फिल्मों के गाने सुनते है तो लगता है कि हिंदी कितनी सर्वग्राही और मीठी भाषा है । हिंदी फिल्म

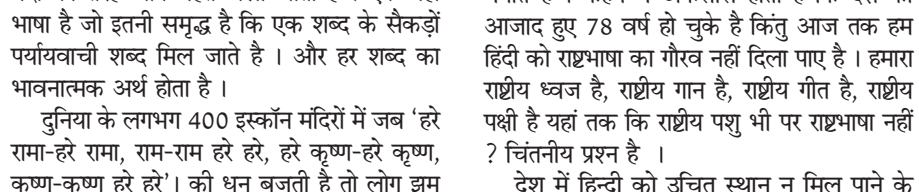

तूने मारी इंट्रीया... हिन्दी की बजी घंटियां

वक्रोक्ति

यशवंत चौहान
लेखक व्यंग्यकार हैं।

तू ने मारी इंट्रीयां रे दिल में बजी घंटियां जब भी इस गीत को जब भी सुनता हूँ राष्ट्र प्रेम की धारा अंतस में हिलोरें मारने लगती है । अंग्रेज़ी शब्दों की ग़ज़ब की तुकबंदी है इसमें । इंट्रीयां, कमेंट्रीयां, गारंटीयां, वारंटीयां, कंट्रीयां आदि शब्दों की तुकबंदी के बीच हिन्दी की घंटियां जोर-जोर से मन मस्तिष्क में बजने लगती है । इस प्रकार के गीतों में राष्ट्र भक्ति के ही स्वर मुखरित होते हैं । ऐसा लगता है सन 1600 में आयी इस्टइंडिया कंपनी से लगाकर 1947 में गयी अंग्रेजी सत्ता को अंग्रेज़ी की घंटी बजाकर ग़ज़ब का निपटाया गया । उन्होंने जितने अत्याचार भी अत्याचार देश पर किए हम भी उनकी भाषा को रोज निपटाते हैं यदि ये प्रयोग पहले ही हो जाते तो अंग्रेज अपनी भाषा का चीरहरण होता देख बहुत पहले ही देश छोड़कर भाग जाते । हालांकि यह पुनीत कार्य अनेक कवियों, लेखकों और गीतकारों ने भी किया है ।

जब हमने स्नातक की उपाधि प्राप्त कर ली थी तब सोचा हिन्दी साहित्य में ही स्नातकोत्तर की उपाधि लेकर बाद में उसी में कुछ शोध करके हिन्दी के प्रति पूर्णतः समर्पित हो जाएं । हम अपने गुरुजी के पास विचार मंथन के लिए पहुंच गए । उन्होंने कहा - बेटा कोई ऐसा विषय चुन लो जो दो वक़्त की रोटी दे सके । हमनें कहा बचपन से ही साहित्य के प्रति मेरा रुझान है वे तत्काल बोले फ़िर अंग्रेज़ी साहित्य में ही कुछ प्रयास करो । तुम्हारी आत्मा का पोषण हो न हो पेट का पोषण अवश्य हो जाएगा । हम कुछ भी कह ले किन्तु सम्मान तो उन्हीं का करते हैं जो फर्राटेदार अंग्रेजी बोल सकते हैं । ऐसा लगा उनकी बात अतीत में भी प्रासंगिक थी और आज भी प्रासंगिक है ।

मेरे एक साहित्यकार मित्र महाआदर्शवादी है किन्तु वे आदर्श स्वयं के लिए नहीं अपितु केवल दूसरों को सिखाने के लिए ही है । उनके प्रवचन सुनकर ऐसा लगता है कि यदि ये नहीं होते तो हिन्दी का क्या होता ? वे अंग्रेजी भाषा को कोसने का कोई भी अवसर नहीं चूकते । मैकाले को दिन रात कोसते हैं किन्तु अपने पुत्र की उच्च शिक्षा मैकाले के देश में ही पूर्ण करवायी और दीक्षांत समारोह में अभिभावक के रूप में शामिल होकर अपनी इस महानता का बखान कर दिया भोले-भाले हिन्दी भाषियों के सम्मुख । नालंदा और तक्षशीला का नाम तोता रटंत की तरह जिनकी ज़बान पर हैं वे खुद की संतानों के लिए केम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड की जुगाड़ में ही रहते हैं । यह बात ठीक वैसी ही है जैसे आयुर्वेदीक औषधि की दुकान लगाए दुकानदार को अपने दिल का इलाज़ करवाने के लिए एलोपैथी की शरण में ही जाना पड़ता है ।

आज ऐसे विद्वानों की कमी नहीं जिन्होंने खुद के लिए व अपने परिवार के लिए अंग्रेज़ी को ही गले लगाया । उच्च पद पर आसीन भी हुए और इससे भी आगे उनकी संतानें विदेशों में ही पढ़ लिखकर भारत में सेवाएं दे रही है हाँ किंतु उपदेश हिन्दी के ही हैं । खुद अंग्रेजी पढ़ो और बच्चों को भी अंग्रेज़ी पढ़ाओ मगर दूसरों को हिन्दी भाषा का महत्व समझाओ ।तुलसी, सुर, कबीर, निराला और दिनकर आदि महाकवियों को बेचकर युगकवि बन जाइये फिर खूब कमाइये और जो अपार धन संपदा मिले उससे अपने बच्चों को अंग्रेजी भाषा में विदेशों में पढ़ाइये । मगर मंचों पर माँ हिन्दी का गुणगान कर लीजिए और शबरी के झूठे बैर पर घड़ियाली आँसू भी बहाइये, हिन्दी भाषी तो हैं ही भोले-भाले वे अंग्रेजी के झूठे बैर का रहस्य नहीं समझ पाएंगे ।

पिछले दिनों हम एक लेख पढ़ रहे थे उसमें संस्कृत भाषा एवं संस्कृति पर लेखिका ने इतना लिख दिया कि कालिदास होते तो उन विदुषी को संस्कृत की महानतम लेखिका मान लेते । हमारा दिल तो तब भर आया जब उन्हें संस्कृत का महत्व प्रतिपादित करने के लिए चालीस-पचास बार अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करना पड़ा और दस-बीस बार नासा का ठप्पा लगवाना पड़ा । शायद इस प्रकार के लेख में लेखक-लेखिका अपना सम्पूर्ण भाषाई पाण्डित्य झाड़ना चाहते हैं । संस्कृत और हिन्दी प्रेम का तो पता नहीं किन्तु अंग्रेजी के उद्धरण देकर वे तथाकथित बहुभाषाविद होने का दावा अवश्य कर सकती है । बहुतेरे ऐसे भी है जिनके लेखों के शीर्षकों में ही अंग्रेजी शब्दों की भरमार होती है मगर दूसरों को भाषायी तौर पर कठघरे में खड़ा करने से बाज नहीं आते । उनका हाल भी वैसा ही है जैसे जिन बातों को खुद नहीं समझे औरों को समझाया है । उनका विमर्श भी बड़ा कमाल का है । लगता है विमर्श का भी पेटेंट हो । तुलसी बाबा ने सही कहा है -

पर उपदेश कुशल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।।

हाँ ! मगर जो कुछ भी हो हिन्दी भाषा का यशोगान करते रहें क्योंकि इससे आपकी राष्ट्रवादी छबि बरकरार रहेगी । समाज में अपनी प्रतिष्ठा के लिए आप फर्राटेदार अंग्रेज़ी बोलते हैं तो क्या फर्क पड़ता है । आपके बच्चे अंग्रेजी माध्यम में ही पढ़ना चाहिए वरन आप अपना प्रभाव रिश्तेदारों एवं पड़ोसियों को कैसे दिखा पाएंगें । हाँ किन्तु समय-समय पर दूसरों को यह सलाह भी देते रहिए कि हमें हिन्दी का सम्मान करना चाहिए क्योंकि हिन्दी का कोई विकल्प नहीं यह वैज्ञानिक भाषा है ।

हिन्दी दिवस की तैयारी

कटाक्ष

सुदर्शन सोनी
लेखक व्यंग्यकार हैं।

बैं क में फिर से हर वर्ष की तरह इस बार भी हेड ऑफिस से अंग्रेज़ी में परिपत्र आया कि हिन्दी दिवस मनाया जाए। अब बेचारे करें भी क्या, यहाँ पूरा काम ही अंग्रेज़ी में होता है। केन्द्र का दबाव नहीं हो तो कोई इस काम में वक्त जाया करे ही क्यों।

आंचलिक प्रमुख ने वही अंग्रेज़ी वाला परिपत्र अंग्रेज़ी में ही शाखाओं को भेज दिया। लिखा–इसे अत्यंत गंभीरता से लें , ऐसा लगे कि हिन्दी दिवस सचमुच मनाया गया।

अब प्रमुख और उनके मातहत रस्तोगी हिन्दी दिवस पर विचार-विमर्श कर रहे थे।

प्रमुख- 'दिस टाइम दे हैव सेन्ट सर्कुलर टू सेलेब्रेट हिन्दी दिवस प्रॉपरली।'

रस्तोगी- 'यस सर, दिस टाइम दे वांट इट नॉट जस्ट अ फार्मेलिटी बट अ रियल फंक्शन।'

प्रमुख- 'सो व्हाट टू डू?'

रस्तोगी- 'सर, फर्स्ट कॉल अ मीटिंग।'

और पत्र अंग्रेज़ी में जारी हो गया।

दूसरे दिन बैठक हुई। प्रमुख ने स्वागत किया–वेलकम एवरीबडी! और बोले, दिस टाइम वी शुड शो दा गवर्नमेंट दैट वी आर प्राउड टू वर्क इन हिन्दी।

एक एजीएम खड़ा हुआ–सर, उस दिन तो मैं नहीं आ पाऊँगा। मेरे बेटे का एडमिशन इंटरनेशनल कॉन्वेंट में है। यही हमारा सपना है सर।

प्रमुख ने सोचा–हिन्दी दिवस या ड्रीम इंग्लिश डे?

इसी बीच एक और परिपत्र आया–हिन्दी पखवाड़ा भी मनाया जाए। अब प्रमुख तनाव में कि एक दिन तो निभ जाए, पखवाड़े में क्या करेंगे।

एक अधिकारी ने सुझाव दिया–सर, डिबेट करवा लेते हैं।

प्रमुख- दैट्स गुड। टॉपिक?

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा कब मिलेगा ?

प्रमुख (चौंककर)- नो! अगर मिल गई तो हमारा स्टेटस कहाँ रहेगा?

कमेटी बनाने की बात हुई, पर समस्या यह कि डिबेट विल बी इन हिन्दी, एंड वी डोंट हैव इनफ हिन्दी नोइंग पीपुल।

तो तय हुआ कि महाविद्यालयीन छात्रों को भी बुला लिया जाए।

पुरस्कार पर चर्चा छिड़ी–

प्रमुख- 'बाय ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी।'

किसी ने टोका–सर, इंग्लिश ऑर हिन्दी?

प्रमुख- इट शुड बी इंग्लिश-कम-हिन्दी डिक्शनरी। टू बी सेफ।

बैठक समाप्त हुई। एक अधिकारी अंग्रेज़ी की नेम प्लेट लेने एमपी नगर रवाना हुआ और दूसरा अपनी एनीवर्सरी गेट-टुगेदर का निमंत्रण अंग्रेज़ी में बनाने बैठ गया ।

तीसरा तो अपने बच्चे का कल प्रवेश प्रतिष्ठित कान्वेंट स्कूल में कराने के नाम से अंदर ही अंदर प्रफुल्लित था।

कार्यकर्ता ही भाजपा संगठन की सबसे बड़ी ताकत

जनता की सेवा और संगठन को मजबूती देना कार्यकर्ताओं का लक्ष्य : हेमंत खण्डेलवाल

बैतूल। भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष व विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने शनिवार को बैतूल विधानसभा के आठनेर मंडल के विभिन्न ग्रामों में प्रवास कर कार्यकर्ताओं और जनता से मुलाकात कर संबोधित किया। श्री खंडेलवाल का कार्यकर्ताओं ने तुलादान करने के साथ जगह-जगह भव्य स्वागत किया। उन्होंने वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के निवास पहुंचकर कुशलक्षेम

जाना। श्री खंडेलवाल ने विभिन्न स्थानों पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते कहा कि भाजपा कार्यकर्ता आधारित संगठन है, और इसमें कार्यकर्ता ही सबसे बड़ी ताकत है। जनता की सेवा और संगठन को मजबूती देना ही हम पार्टी कार्यकर्ताओं का लक्ष्य है। भाजपा देश का एक मात्र ऐसा राजनीतिक दल है, जिसमें सभी कार्यकर्ता होते हैं, सिर्फ दायित्व बदलते रहते हैं। इसलिए आप सभी कार्यकर्ता प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा किए जा रहे विकास और जनहितैषी कार्यों का लाभ जन-जन तक पहुंचाकर पार्टी संगठन को और बुलंदियों तक ले जाएं।

कार्यकर्ताओं के सम्मान में कभी कमी नहीं आएगी - इस अवसर पर श्री खंडेलवाल ने कहा कि कार्यकताओं से मिले इस अपार प्रेम और आत्मीयता से मैं अभीभूत हूं। पार्टी कार्यकर्ताओं के सम्मान में कभी भी कमी नहीं आने दूंगा। पार्टी कार्यकर्ताओं और जनता ने जो प्यार व स्नेह दिया, उसका कर्ज जीवन भर नहीं उतार पाऊंगा। भाजपा एक परिवार है, मुझे पार्टी ने नया दायित्व सौंपा है, मैं आप सभी के सहयोग से इस दायित्व का निर्वहन करूंगा। आप सभी कार्यकर्ताओं के आशीर्वाद से ही मुझ जैसे सामान्य कार्यकर्ता को पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व और प्रदेश नेतृत्व ने प्रदेश अध्यक्ष पद का दायित्व सौंपा। आज आप सभी कार्यकर्ताओं का जगह-जगह प्रेम, स्नेह और आशीर्वाद मिला। हम सभी कार्यकर्ता पार्टी संगठन को और आगे ले जाने का कार्य करेंगे।

समाज व व्यापारिक संगठनों ने किया भव्य स्वागत- श्री खंडेलवाल का आठनेर मंडल में प्रवास के दौरान गांव-गांव में भव्य स्वागत किया गया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने बैतूल विधानसभा के शिवनपाट नगर मंडल से कार्यकर्ताओं से मुलाकात शुरू की। उन्होंने बोरपानी, सत्तूदेव जोड़ जावरा, धनोरा, सावंगी जोड़, गुडखेड़ा में कार्यकर्ताओं द्वारा स्वागत किया गया। गलफट में कुनबी समाज, रिलायंस पेट्रोल पंप पर किराड़ समाज, गणवंत नगर, बस स्टैंड आठनेर के साथ जगदीश सेठ की दुकान के पास व्यापारिक संघ और सुधा सोनी की दुकान के पास मांझी समाज द्वारा स्वागत किया गया। इसके साथ ही मातंग समाज चौक पर अल्पसंख्यक मोर्चा, बाजार चौक, नगर परिषद में स्वागत के बाद श्रीराम मंदिर में तुलादान के साथ साहू समाज द्वारा स्वागत किया गया। श्री खंडेलवाल ने सभी कार्यकर्ताओं और विभिन्न समाज बंधुओं का अभिवादन किया। श्री खंडेलवाल कार्यकार्ताओं से मुलाकात के दौरान हनुमान मंदिर चौक पहुंचे, जहां माली समाज द्वारा स्वागत किया गया। उन्होंने श्री गावंडे निवास पहुंचकर वरिष्ठजनों से मुलाकात की और ग्राम गुणखेड़ में स्वर्गीय श्यामराव मकोडे के निवास पहुंचकर उनके परिजनों से सौजन्य भेंट की।

भाजपा केवल राजनीति नही करती, बल्कि जनहित के कार्य कर गरीबो की सेवा करती : हेमंत खंडेलवाल

बैतूल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक भाजपा द्वारा देश भर मे सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम चलाया जाना है। जिसको लेकर विभिन्न स्तर पर बैठक व कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इसी तारतम्य में शुक्रवार को भाजपा प्रदेशाध्यक्ष व विधायक हेमंत खंडेलवाल की विशेष मौजूदगी मे गंज मंडल की कार्यशाला आयोजित की गयी। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार और मंडल प्रभारी राजेंद्र मालवीय भी उपस्थित रहे। बैतूल गंज मंडल की आयोजित कार्यशाला में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा केवल राजनीति हीं नहीं करती बल्कि समय समय पर आमजनो, गरीबो के हित मे विभिन्न कार्य के माध्यम से सेवा भी करती है। पार्टी के द्वारा सेवा पखवाडा कार्यक्रम भी इसी मंशा के अनुरूप आयोजित किया जा रहा। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओ से आव्हान किया कि इस कार्यक्रम मे बढचढकर हिस्सा लेते हुए जनता से सीधा संवाद करते हुए उनसे जुडाव स्थापित करें। इस दौरान जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार नें कार्यकर्ताओ से कहा कि पार्टी द्वारा इस दौरान जितने भी कार्यक्रम तय किये है उसके अनुसार अपनी अपनी जिम्मेदारी सुनिश्चित करते हुए सभी ज्येष्ठ व वरिष्ठ कार्यकर्ताओ का मार्गदर्शन लेते हुए सेवा कार्यक्रम को सेवा पूर्वक मनाये ताकि पार्टी की मंशानुसार कार्यक्रम सफल हो सके।

गंज सब्जी बाजार के लिए लगे पेवर ब्लॉक पर खड़े हो रहे वाहन

शिफ्ट नहीं किया बाजार , अब भी सडक़ किनारे लग रही दुकान

बैतूल। शहर के लोहिया वार्ड स्थित गंज प्राइमरी स्कूल के डिस्मेंटल के बाद यहां साप्ताहिक सब्जी बाजार लगाने का प्लान नगरपालिका द्वारा बनाया गया था, 10 लाख रुपए की लागत से यहां 30 हजार वर्गफीट में सब्जी विक्रेताओं के बैठने के लिए व्यवस्थित रूप से पेवर ब्लाक भी लगाए गए हैं, लेकिन इस स्थान को वाहन चालक एक तरह से पार्किंग के रूप में इस्तेमाल कर रहे है यानि यहां छोटे-बड़े वाहनों को खड़ा किया जा रहा है। जिससे यह स्थल पार्किंग बनकर रह गया है। बता दे कि गंज में प्रति बुधवार और शनिवार के दिन साप्ताहिक बाजार लगता है। यह बाजार जेएच कॉलेज रोड से लेकर बाबू चौक गंज तक की सडक पर अव्यवस्थित रूप से लगता है, जिससे व्यापारियों सहित सब्जी विक्रेता, खरीदारों को तो परेशानियों का सामना करना ही पड़ता है, साथ ही ट्रैफिक की समस्या भी बाजार के दिन ज्यादा होती है। इस क्षेत्र में भारी वाहनों की आवाजाही के कारण पूरा क्षेत्र अस्त-व्यस्त हो जाता है। जिससे सब्जी विक्रेताओं को भारी

परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बावजूद नगरपालिका गंज सब्जी बाजार को व्यवस्थित रूप से लगाने की प्लानिंग में लापरवाही बरत रही है, जबकि लंबे समय से ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के सब्जी विक्रेता एक व्यवस्थित सब्जी बाजार की मांग करते आ रहे हैं।

सडकों और गलियों में लग रहा बाजार - गंज का साप्ताहिक बाजार सडक़ किनारे संचालित हो रहा है। सडक पर जगह खत्म होने के बाद सब्जी विक्रेता गलियों की सडकों पर बाजार लगाने को मजबूर हैं। अव्यवस्थित बाजार के कारण सब्जी विक्रेताओं को किसी भी प्रकार की सहूलियत भी नगरपालिका द्वारा नहीं दी जा रही है। आवारा मवेशी बाजार में घूमते हैं, वहीं पीने के पानी के लिए भी नगरपालिका ने कोई व्यवस्था नहीं बनाई है। गंज बाजार में न तो व्यापारियों के लिए चतूबरे बने है और न ही पार्किंग की सुविधा है। यहां ग्राहकों को भी वाहन में बैठे-बैठे ही सब्जियों की खरीदी करनी पड़ती है। जिससे ट्रॉफिक की समस्या उत्पन्न हो रही है, वहीं लेकिन सब्जी विक्रेताओं को मिलने वाली सुविधाएं नदारद हैं।

रात में खड़े हो रहे भारी वाहन

सब्जी बाजार के लिए लगाए गए पेवर ब्लॉक वाले मैदान पर रात के समय भारी वाहन खड़े हो रहे हैं जिससे पेवर ब्लॉक डेमेज होने की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता। बावजूद इसके नगरपालिका इस ओर ध्यान नहीं दे रही है। सब्जी व्यापारियों को भी यह जानकारी नहीं है कि यहां बाजार लगेगा। इस बाजार में सब्जी व्यापारियों की इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद व्यवस्थित सब्जी बाजार नहीं है, जिसके कारण सभी को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इधर लोगों का कहना है कि भारी वाहनों के खड़े होने की वजह से पेविंग ब्लाक खराब हो सकते है। ऐसा होता है तो यहां सब्जी विक्रेताओं और ग्राहकों को परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

10 लाख की लागत के पेवर ब्लॉक लगाए

नगरपालिका ने गंज की 30 हजार वर्गफीट भवन डिस्मेंटल के बाद खाली हुई जमीन पर बाजार लगाने के लिए 10 लाख की लागत से पेवर ब्लॉक लगवाए गए हैं। यह पूरा एरिया सब्जी व्यापारियों के बैठने के लिए व्यवस्थित किया गया है। बुधवार और शनिवार को साप्ताहिक सब्जी बाजार यहां पर लगाने की योजना है, लेकिन फिलहाल इस जगह पर वाहन खड़े हो रहे है और बाजार सडक़ किनारे लग रहा है। इससे सडक पर सब्जी व्यापारियों के बैठने के कारण होने वाली ट्रैफिक समेत अन्य परेशानियां भी दूर नहीं हो पा रही है। बता दे कि गंज साप्ताहिक बाजार में करीब 1500 से अधिक दुकान लगती है।

इनका कहना है -

जल्द ही प्लानिंग बनाकर साप्ताहिक सब्जी बाजार को गंज प्राइमरी स्कूल के स्थान पर शिफ्ट किया जायेगा। यदि पेविंग ब्लाक पर भारी वाहन खड़े किये जा रहे है, तो कार्रवाही कराई जायेगी।

- सतीश सटसेनिया,
सीएमओ, नगरपालिका बैतूल

जिले में आदान विक्रेताओं के लिए दो नवीन बैचों का किया शुभारम्भ

बैतूल। जिले में आदान विक्रेताओं के लिए दो नवीनतम बैच टीपीएन 3223 एवं 3224 का शुभारम्भ किया गया। प्रत्येक बैच में 40 प्रतिभागियों को वर्षभर साप्ताहिक 48 कक्षाओं के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों, विभागीय अधिकारियों एवं विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाएगा। अब तक जिले में 12 देशी डिप्लोमा बैच सम्पन्न किए जा चुके हैं, जिनमें 480 आदान विक्रेताओं एवं बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षित कर तकनीकी रूप से दक्ष बनाया गया है। इनमें से अनेक ने अपने स्वयं के प्रतिष्ठान स्थापित कर रोजगार प्राप्त किया है। यह कोर्स युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ ही तकनीकी जानकारी का ग्रामीण स्तर पर प्रसार भी कर रहा है। शुभारम्भ कार्यक्रम में विज्ञान केन्द्र बैतूल बाजार प्रमुख वैज्ञानिक डॉ.एसके तिवारी, उन्नतशील कृषक महावीर सिंह गोठी, उप संचालक कृषि जिला बैतूल डॉ. आनंद कुमार बडोनिया, सहायक संचालक कृषि सुरेन्द्र कुमार परहाते, सहायक संचालक कृषि आरएस राजपूत एवं कोर्स के फेसिलीटेटर नितिन कुमार जायसवाल एवं विजेन्द्र वाईकर उपस्थित रहे और प्रतिभागियों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

कैशलेस चिकित्सा योजना लागू होने की घोषणा से विद्युत पेंशनर्स में खुशी की लहर

अक्टूबर से मिलेगी कैशलेस इलाज की सौगात

बैतूल। मध्य प्रदेश विद्युत मंडल पेंशनर एसोसिएशन बैतूल की मासिक बैठक कैम्पेन हाउस परिसर, लिंक रोड, बैतूल में सेवानिवृत्त कार्यपालन अभियंता दीपक कमाविशदार की अध्यक्षता में गरिमामय रूप से संपन्न हुई। इस बैठक में 100 से अधिक पेंशनर शामिल हुए। हाल ही में सेवानिवृत्त हुए विद्युत मंडल के कर्मचारियों का संगठन की ओर से आत्मीय स्वागत करते हुए उनका पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मान किया गया। सभी उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि के साथ नए पेंशनर्स का संगठन में अभिनंदन किया और उन्हें भविष्य की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया गया। वहीं माह सितंबर में जिन सदस्यों का जन्मदिन है, उन्हें सरस्वती माता को स्मरण करते हुए शुभकामनाएं दी गईं। संचालन कार्यवाहक अध्यक्ष बी. पी. धामोढ़े ने किया। बैठक में प्रांतीय विधि सलाहकार एवं शाखा

सचिव बैतूल एम. एम. अंसारी ने कैशलेस चिकित्सा योजना की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि इसके लिए जो आवेदन पत्र / ऑप्शन फॉर्म भरना है, वह अंग्रेजी के ब्लॉक लेटर में अत्यंत सावधानीपूर्वक भरा जाए। अधूरा या काट-छांट किया गया फार्म स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि ग्वालियर आयोजन के माध्यम से समस्त विद्युत पेंशनर्स हितैषी संगठन अब एकजुट हो गए हैं। यदि मांगों पर सकारात्मक निर्णय नहीं हुआ तो भविष्य के लिए संयुक्त कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाएगी। बैठक को प्रांतीय उपाध्यक्ष डी. के. तिवारी ने भी संबोधित किया। स्वल्पाहार के पश्चात दीपक कमाविशदार ने सभी उपस्थितजनों का आभार व्यक्त किया और जो सदस्य अब इस संसार में नहीं रहे, उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

यातायात नियमों के उल्लंघन करने वाले 800 चालकों पर कार्रवाई

बैतूल जिले में 3 लाख से अधिक समन शुल्क वसूल

बैतूल। यातायात पुलिस ने सडक़ दुर्घटनाओं की रोकथाम एवं यातायात नियमों के प्रति जागरूकता लाने 15 दिवसीय विशेष अभियान चला रही है। पुलिस ने अभी तक 800 वाहन चालकों के खिलाफ चालानी कार्रवाही करते हुए करीब 3 लाख से अधिक समन शुल्क वसूल किया है। दरअसल पुलिस मुख्यालय भोपाल के निर्देशानुसार, सडक़ परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय तथा सुप्रीम कोर्ट कमेटी ऑन रोड सेफ्टी के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए यातायात पुलिस 8 सितंबर से 22 सितंबर तक विशेष अभियान संचालित कर रही है। जिसका उद्देश्य बढ़ती सडक़ दुर्घटनाओं एवं

मृत्यु दर में कमी लाना, आमजन को यातायात नियमों का पालन करने हेतु जागरूक करना, तेज गति, नो-हेलमेट और नशे में वाहन चलाने वालों पर शिकंजा कसना है। जिसमें पुलिस द्वारा ऐसे वाहन चालकों पर कार्रवाही की जा रही है जो तेज गति से वाहन चलाते है। बिना हेलमेट/सीट बेल्ट, नाबालिग द्वारा वाहन चलाना, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग करना, शराब पीकर वाहन चलाना, रॉन्ग साइड, ओवरलोडिंग, बिना लाइसेंस, बिना फिटनेस और बिना परमिट वाहन चलाने वाले करीब 800 वाहन चालकों पर चालानी कार्रवाई कर कुल 3,09,400 समन शुल्क वसूल किया गया। यातायात पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि सभी नागरिक यातायात नियमों का पालन करें। सडक़ सुरक्षा को अपनी प्राथमिकता बनाएं।

'कृष-4' में कई नए बदलाव दिखाई देंगे

ऋतिक रोशन की आने वाली फिल्म 'कृष-4' को लेकर नई बातें सामने आई। फिल्म को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया कि इसमें ऋतिक का ट्रिपल रोल होगा। फिल्म में कुछ पुराने किरदारों की भी फिल्म में वापसी होगी। इस पार्ट में प्रियंका चोपड़ा की भी वापसी होने जा रही है। इसके अलावा सीरीज के कुछ पुराने कलाकार भी इसमें दिखाई देंगे। सबसे खास बात यह कि 23 साल बाद फिल्म में जादू की भी वापसी होगी।

ऋतिक रोशन स्टारर फिल्म 'वॉर 2' बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाई नहीं कर पाई। वहीं एक तरफ फैंस को ऋतिक रोशन 'कृष' फ्रेंचाइजी की अगली फिल्म 'कृष 4' का बेसब्री से इंतजार है। इस बीच फिल्म को लेकर एक बहुत बड़ी अपडेट सामने आई। ऋतिक रोशन की अगली फिल्म 'कृष 4' को लेकर राकेश रोशन ने बड़ी अपडेट शेयर की। उन्होंने फिल्म को लेकर कई बड़ी बातें कहीं। बातचीत के दौरान उन्होंने इसके रिलीज को लेकर भी बात की। ऋतिक रोशन के पिता और फिल्ममेकर राकेश रोशन ने हाल ही में 'कृष 4' को लेकर बड़ी अपडेट शेयर की। उनका कहना है कि बजट की वजह से फिल्म में देरी हो रही थी. हालांकि अब उन्होंने वो सब चीजें सुलझा ली। राकेश रोशन ने कहा, 'स्क्रिप्ट लिखने में ज्यादा समय नहीं लगा. प्रेशर बजट का था. अब जबकि हमें इसका अंदाजा हो गया है कि फिल्म के लिए कितना बजट चाहिए तो हम इसे शुरू कर देंगे.

फिल्म पर आगे बोलते हुए राकेश रोशन ने बताया कि फिल्म पर जोर-शोर से काम जारी है और जल्द ही वो इसकी शूटिंग पूरी करने जा रहे हैं। वहीं उन्होंने यह भी बताया कि इस फिल्म के प्री-प्रोडक्शन में बहुत टाइम लगने वाला है। इसलिए फ्लोर पर जाने से पहले वो अच्छे से तैयारी करना चाहते हैं। वहीं जब फिल्म की रिलीज डेट के बारे में पूछा गया तो, उन्होंने कहा कि, 'हम 2027 में इसे रिलीज करने की प्लानिंग कर रहे हैं।' देखना होगा कि ऋतिक रोशन की ये फिल्म कब तक आएगी।

अपकमिंग फिल्म 'कृष 4' कृष फ्रेंचाइजी की चौथी किस्त है। इसकी शुरुआत साल 2003 में आई फिल्म 'कोई मिल गया' से हुई थी। यह फिल्म जबरदस्त सुपरहिट साबित हुई थी। इसके बाद साल 2006 में इस फिल्म का दूसरा पार्ट 'कृष' नाम से आया और 2013 में तीसरा पार्ट 'कृष 3' नाम से आया। ये दोनों फिल्में भी ब्लॉकबस्टर साबित हुई। ऐसे में ऋतिक रोशन के फैंस 'कृष 4' का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. बताया जा रहा है कि इस फिल्म को खुद ऋतिक रोशन ही डायरेक्ट कर रहे हैं।

'कृष-4' में प्रियंका के अलावा प्रीति जिंटा और दिग्गज अभिनेत्री रेखा भी नजर आ नजर आ सकती हैं। ऋतिक रोशन इस मल्टी-स्टारर फिल्म में ट्रिपल रोल निभाने वाले हैं। प्लानिंग यह है कि कृष को अलग-अलग टाइमलाइन पर दिखाया जाएगा। इसे पास्ट और फ्यूचर के जरिए आगे बढ़ाया जाएगा, ताकि एक बड़े खतरे को खत्म किया जा सके। वीएफएक्स और प्रोडक्शन पर अधिक ध्यान देने के साथ, फिल्म फैमली इमोशन्स और रिश्तों पर बेस्ड रहेगी।

हालांकि स्क्रिप्ट या स्टोरीलाइन के बारे में कोई बड़ा अपडेट नहीं आया, लेकिन यह पुष्टि हो गई है कि अगले पार्ट को ऋतिक रोशन खुद पहली बार डायरेक्ट करने जा रहे हैं। फिल्म में टाइम ट्रेवल एलिमेंट्स शामिल किए जाएंगे। फिलहाल वाईआरएफ स्टूडियो में 'कृष-4' के लिए प्री-प्रोडक्शन का काम चल रहा है, जिसमें एक मजबूत वीएफएक्स टीम फिल्म के प्री-विजुअलाइज़ेशन पर काम कर रही है।

ऋतिक स्क्रिप्ट को बेहतर बनाने के लिए अपने राइटर्स की टीम और आदित्य चोपड़ा के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। फिल्म को 2026 की शुरुआत में फ्लोर पर उतारा जा सकता है। 'कृष-4' में कोई मिल गया की रिलीज के 23 साल बाद जादू की वापसी भी होगी। इससे पहले, ऐसी अफवाहें थीं कि चीनी गायक-रैपर और ग्लोबल सेंसेशन जैक्सन वांग 'कृष-4' का हिस्सा होंगे। हालांकि, उन्होंने इस तरह की अटकलों का महज अफवाह बताया।

राज कुंद्रा संग बढ़ीं शिल्पा शेट्टी की मुश्किलें

बॉलीवुड अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी और उनके पति राज कुंद्रा के खिलाफ मुंबई पुलिस की आर्थिक शाखा ने लुक आउट नोटिस जारी किया है। दोनों पर 60.4 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी से जुड़े मामले में ये कार्रवाई की गई। इससे दोनों की मुश्किलें बढ़ गई। पहले अपने वकील के जरिए इस आरोप को बेबुनियाद मामला बता चुके हैं। इस साल अगस्त में मुंबई के जुहू पुलिस स्टेशन में शिल्पा और राज कुंद्रा के खिलाफ 60.4 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया गया। शिकायतकर्ता दीपक कोठारी लोटस कैपिटल फाइनेंशियल सर्विसेज के डायरेक्टर हैं।

जांच के दौरान मुंबई पुलिस की आर्थिक शाखा (ईओडब्ल्यू) ने अब शिल्पा शेट्टी और राज कुंद्रा के खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी किया है। मुंबई पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि पुलिस इनके ट्रेवल लॉग देख रही थी और अब लुकआउट नोटिस जारी किया गया। धोखाधड़ी के समय के बीच दोनों कहां गए और पैसों का लेनदेन कहां-कहां हुआ, मुंबई पुलिस ने यह जानकारी निकाली है।

कोठारी ने अप्रैल 2015 में 31 करोड़ रुपए और सितंबर 2015 में 28 करोड़ रुपए कंपनी में निवेश किए। हालांकि, साल 2016 में शिल्पा ने कंपनी के डायरेक्टर पद से इस्तीफा दे दिया। जबकि, राज कुंद्रा ने व्यक्तिगत गारंटी दी थी। कोठारी को बाद में पता चला कि साल 2017 में कंपनी के खिलाफ एक समझौते की चूक के कारण दिवालियापन की कार्यवाही शुरू हो गई थी। उनका दावा है कि उनके निवेश का पैसा बिजनेस में इस्तेमाल न होकर निजी खर्चों में उड़ा दिया गया। कोठारी की शिकायत पर मुंबई पुलिस ने धोखाधड़ी और जालसाजी की धाराओं के तहत मामला दर्ज किया था।

रियल बॉक्स

हीरो की पहचान बदलने वाला हीरो

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

दे श की फिल्म इंडस्ट्री में दो ही ऐसे सितारे हैं, जो बेजोड़ हैं। उनके सामने हिंदी फिल्मों के सलमान खान, शाहरुख़ खान आमिर खान और दक्षिण के जूनियर एनटीआर, प्रभाष और पुष्पा का हीरो अल्लू अर्जुन भी बहुत पीछे हैं। ये हैं दक्षिण भारत की फिल्मों में सुपर स्टार रजनीकांत और हिंदी फिल्मों के अमिताभ बच्चन। लेकिन, यदि इन दोनों में से भी किसी एक को चुनना हो, तो निःसंदेह वो नाम होगा रजनीकांत का। वे बहुत कम फ़िल्में करते हैं, पर जब परदे पर आते हैं, तो मनोरंजन का धमाका हो जाता है। उनकी नई फिल्म 'कुली' ने भी कुछ ऐसा ही किया। इसका प्रमाण है कि दो सप्ताह में ही ये फिल्म 500 करोड़ क्लब में शामिल हो गई। 'कुली' के अलावा भी रजनीकांत की कई फिल्में की, जिनकी बॉक्स ऑफिस कमाई 500 करोड़ का आंकड़ा पार कर चुकी हैं।

2018 में आई रजनीकांत की फिल्म '2.0' में एमी जैक्सन और ऐश्वर्या राय अहम किरदार में नजर आए थे। इस फिल्म ने वर्ल्ड वाइड करीब 700 करोड़ की कमाई की और बॉक्स ऑफिस पर हंगामा कर दिया था। 2023 की फिल्म 'जेलर' भी रजनीकांत की बड़ी हिट फिल्म साबित हुई। एक्शन और कॉमेडी से भरपूर इस फिल्म को दर्शकों ने खूब पसंद किया। फिल्म में जैकी श्रॉफ, तमन्ना भाटिया और मोहनलाल जैसे बड़े सितारे भी थे। इस फिल्म ने वर्ल्डवाइड 650 करोड़ से ज्यादा की कमाई की थी। रजनीकांत की नई फिल्म 'कुली' में उनके साथ आमिर खान ने इसमें खास कैमियो किया है। इस फिल्म ने दो सप्ताह में ही 500 करोड़ का बिजनेस कर लिया। खास बात ये कि रजनीकांत की फिल्मों का जादू सिर्फ साउथ तक सीमित नहीं है। दुनियाभर में उनके फैंस उनकी फिल्में देखने उमड़ते हैं।

रजनीकांत को फिल्मों में अभिनय करते करीब 50 साल हो गए। इसके बाद भी उनकी लोकप्रियता किसी से छिपी नहीं है। 1975 में फिल्म 'कथा संगम' से डेब्यू करने वाले रजनीकांत को उनके चाहने वाले भगवान के समान पूजते हैं। उनके मंदिर भी बने, जहां उनकी मूर्ति लगी है। उनकी फिल्मों का जलवा ये है कि उनके फैंस और दर्शक फिल्म की समीक्षा का इंतजार नहीं करते, बल्कि देखने पहुंच जाते हैं। इसके बावजूद रजनीकांत अपने सुपरस्टार स्टेटस को पचा नहीं पाते। वे जनता के बीच सामान्य आदमी की तरह दिखते हैं। वे सिनेमा की चमक दमक वाली दुनिया से भी दूर रहते हैं। असल जिंदगी में उन्हें देखना, किसी आसपास के बुजुर्ग आदमी को देखने जैसा है। परदे पर वे जितने गुस्से में दिखते हैं, अपने विरोधियों को अपने स्टाइल और एक्शन से धूल चटाते नजर आते हैं। लेकिन, असलियत में शायद ही किसी को उन्होंने थप्पड़ भी मारा हो। रजनीकांत की अपनी सामान्य जीवनशैली और मासूमियत से भरा चेहरा हैं। मुंबई के फ़िल्मी हीरो से रजनीकांत बहुत अलग हैं। वे आधे गंजे, कानों पर बालों का गुच्छा लिए, दाग वाली चमड़ी के साथ घूमते हैं। कभी अपना असली चेहरा छुपाने की कोशिश नहीं करते। वास्तव में तो रजनीकांत हीरो के उस चेहरे का अपवाद हैं, जो लोग बरसों से परदे पर देखते आए हैं।

रजनीकांत ने बरसों से चली आ रही फिल्म इंडस्ट्री की उन वर्जनाओं को तोड़ा है, जो हीरो के लिए मानक थी। वे जब फिल्मों में हीरो बने, तब गोरे चिट्टे और स्मार्ट हीरो का ही जमाना था। ऐसे में सांवले हीरो को इसलिए स्वीकारा गया कि उनमें कुछ अलग स्वैग है। उन्होंने तब खुद को एमजी रामचंद्रन और शिवाजी गणेशन की लाइन में खुद को खड़ा किया। एमजी रामचंद्रन और रजनीकांत में एक बड़ा फर्क था। एमजीआर अपनी परदे की छवि को असल ज़िंदगी में भी उतार लाए थे और वो लोगों को लुभाने की कोशिश करते, लेकिन रजनीकांत ने ऐसा कभी नहीं किया। उन्होंने खुद को दबे हुए लोगों का हीरो बना लिया। वे उन लोगों के लिए आवाज उठाते नजर आए जो दबे कुचले समाज से थे।। फिर चाहे वो 'रंजीत' का दलित हीरो

'काला' हो या विदेश में फंसे भारतीयों का मसीहा 'कबाली।' रजनीकांत की ज्यादातर फिल्मों के कथानकों में वे उनके साथ खड़े नजर आए जिनके साथ कोई नहीं था। दरअसल, वे सिनेमा के परदे के वो हीरो हैं, जो लोगों के साथ खड़े दिखाई देते हैं। चार दशक से ज्यादा समय से वे सिनेमा का ये सबसे लोकप्रिय सितारा सिर्फ तमिल का सुपरस्टार नहीं है। 74 साल की उम्र में भी रजनीकांत बड़े परदे पर वो कारनामा कर रहे हैं, जिनके सामने उनसे कई साल छोटे हीरो भी दबे से नजर आते हैं। रजनीकांत नई फिल्म 'कुली' से एक बार फिर परदे के सरताज बने हुए हैं।

नई फिल्म 'कुली' सिर्फ फिल्म का नाम नहीं है। बल्कि इस शब्द से उनका संबंध 50 साल पहले भी रहा जब रजनीकांत कुली और बस कंडक्टर का काम कर रहे थे। यह काम करते हुए उन्हें कई बार लोगों की झिड़कियां भी सुनना पड़ती थी। एक बार उन्होंने एक शख्स का सामान टैंपो में रखा तो उन्हें दो रुपए मिले थे। अभिनेता के मुताबिक जिस शख्स का उन्होंने सामान रखा था वो उनका कॉलेज का दोस्त था, जिसे रजनीकांत बहुत चिढ़ाते थे। दोस्त ने रजनीकांत से कहा था कि तू ये क्या नौटंकी कर रहा है! इसके बाद रजनीकांत रोने लगे थे। बेंगलुरु में जन्मे रजनीकांत ने 1975 में पहली बार एक्टिंग में डेब्यू किया। उन्हें परदे पर लाने में रजनीकांत के दोस्त राज बहादुर में बहुत मदद की। दादा साहब फाल्के अवॉर्ड लेते वक्त भी रजनीकांत ने अपने दोस्त राज बहादुर को याद किया और धन्यवाद कहा। राज बहादुर ने ही रजनीकांत को मद्रास फिल्म इंस्टीट्यूट में दाखिला लेने के लिए के लिए मोटिवेट किया। उनके लिए ऐसा कर पाना आसान नहीं था। तब ये और कुछ और दोस्त उसकी मदद के लिए आगे आए, जो उनकी ही तरह बस कंडक्टर थे। एक्टिंग सीखने के दौरान ही इन्होंने तमिल भी सीखी, क्योंकि वे कर्नाटक में जन्मे हैं।

इसी बीच रजनीकांत की मुलाकात फिल्म डायरेक्टर के बालचंद्र से हुई। इन्होंने ही रजनीकांत को फिल्म 'अपूर्वा रागनगाल' में मौका दिया। इसमें कमल हासन और श्रीविद्या भी थीं। हालांकि, इसमें इनका छोटा-सा नेगेटिव रोल था। इसके बाद इन्हें शुरुआती दो-तीन साल तक ऐसे में ही रोल मिले। नेगेटिव कैरेक्टर प्ले करने के बाद रजनीकांत पहली बार अपनी विलेन की इमेज तोड़ते हुए फिल्म 'भुवन ओरु केल्विकुरी' में बतौर हीरो नजर आए थे। मुथुरमम और रजनीकांत की जोड़ी ऑडियंस को खूब पसंद आई और इन्होंने करीब 25 फिल्मों में काम किया।

1978 में आई रजनीकांत की 'बिल्ला' बहुत सफल हुई थी, जो अमिताभ बच्चन की हिट 'डॉन' की रीमेक थी। तमिलनाडु सरकार ने उन्हें पहली बार 'मुंदरू मुगम' के लिए साल 1982 में बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड दिया था। फिल्म 'बातशा' से रजनीकांत सुपरस्टार बने थे, जो साल 1995 में रिलीज हुई थी। इसने बॉक्स ऑफिस के कई रिकॉर्ड तोड़े थे। तमिल फिल्मों को इंटरनेशनल स्टेज तक पहुंचाने में भी रजनीकांत की बड़ी भूमिका रही। 'मुथू' जापान में रिलीज होने वाली पहली तमिल फिल्म थी। इसके बाद साल 2017 में इनकी 'चंद्रमुखी' तुर्की और जर्मन में रिलीज हुई थी। 'शिवाजी' इनकी पहली फिल्म है जो ब्रिटेन और साउथ अफ्रीका में बॉक्स ऑफिस पर टॉप पर थी।

अपने करियर के शुरूआती 10 सालों में ही रजनीकांत ने 100 फिल्मों का आंकड़ा पूरा कर लिया था। उन्होंने 100वीं फिल्म 'श्री राघवेंद्र' में हिंदू संत राघवेंद्र स्वामी की भूमिका निभाई थी। फिल्मों में आने से पहले रजनीकांत ने अभिनय की शुरुआत कन्नड़ नाटकों से की। इन्होंने दुर्योधन की भूमिका निभाई थी, जिससे ये बहुत लोकप्रियता मिली। पहली बार तमिल फिल्मों में एनिमेशन इंट्रोड्यूस करने का श्रेय भी इसी हीरो के खाते में दर्ज है। 'राजा चायना रोजा' पहली फिल्म थी, जिसमें एनिमेशन शामिल किया गया। रजनीकांत ने तमिल, हिंदी, मलयालम, कन्नड़ और तेलुगु के साथ एक बांग्ला फिल्म में भी काम किया है। बांग्ला फिल्म का नाम 'भाग्य देवता' था। इनकी पहली हिंदी फिल्म 'अंधा कानून' की जिसमें अमिताभ बच्चन हीरो थे।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

छात्र आंदोलनों पर फिल्में बनाना बड़ी चुनौती

अशोक जोशी

पिछले कुछ दिनों से दुनिया का युवा और छात्र बहुत बेचैन है। देश और समाज की बिगड़ती स्थिति और बढते भ्रष्टाचार के बीच पिसते छात्र और युवा वर्ग आंदोलन को अपना हथियार बनाकर इस स्थिति से समाज और

देश का बाहर निकालने के लिए अपनी तरफ से प्रयास कर रहा है। श्रीलंका, बांग्लादेश और उसके बाद अब नेपाल में छात्र आक्रोश ने भ्रष्ट सरकार को उखाड़ फेंकने में कामयाबी हासिल की। फिल्म बनाने के लिए छात्र आंदोलन अच्छा विषय है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेते हुए कुछ छात्रों ने परीक्षाएं नहीं दीं और कुछ समय बाद वे फिल्म निर्माण से जुड़ गए।

फिल्म हिंदी सिनेमा में छात्र आंदोलन भी कथानक का विषय रहे हैं। 1970 और 1980 के दशक की फिल्मों में, जो सामाजिक राजनीतिक बदलावों को चित्रित करती थीं उन फिल्मों ने न केवल छात्र आंदोलनों को विषय वस्तु के रूप में इस्तेमाल किया, बल्कि कुछ फिल्मों ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान छात्रों की भागीदारी को भी दिखाया। हालांकि, भारतीय सिनेमा पर छात्रों के व्यवहार पर पड़ते प्रभाव पर अभी भी सार्थक फिल्म की प्रतीक्षा है। 1970 के दशक के छात्र आंदोलनों ने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को उठाया। जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में 1974 में शुरू हुए जेपी आंदोलन, जिसका मुख्य कारण बेरोजगारी और खाद्यान्नों की कीमत वृद्धि था, ने छात्रों की भागीदारी को बढ़ावा दिया और बाद में आपातकाल के खिलाफ एक बड़े आंदोलन का रूप ले लिया। लेकिन यह आंदोलन भी महज राजनीतिक आन्दोलन मात्र बन कर रह गया।

देशभर में ऐसी कई मुद्दे हैं, जिनसे प्रेरित होकर बॉलीवुड में फिल्में बनाई जाती हैं। इन दिनों फीस बढ़ोतरी के खिलाफ जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स का संसद मार्च चर्चा में बना हुआ था। इस दौरान पुलिस से झड़प भी हुई जिनमें कई छात्र घायल हो गए हैं। इस तरह के छात्र आंदोलन कई बार फिल्मों में भी देखने का करीब से मिला है। इसके बावजूद ऐसी मुट्ठी भर फिल्में उल्लेखनीय है जिनमे छात्र आन्दोलन का सतही से लेकर व्यावहारिक चित्रण किया गया है। 2004 में प्रदर्शित अजय देवगन, विवेक ओबरॉय और अभिषेक बच्चन अभिनीत 'युवा' कोलकाता के एक कॉलेज की राजनीति दिखाती है। इस फिल्म में इन तीनों अभिनेताओं का किरदार काफी दिलचस्प है। 'युवा' में दिखाया गया कि कैसे इन तीनों किरदारों की जिंदगी एक-दूसरे के बांटने की घटना से बदल जाती है और कैसे वे इसे साफ करने के लिए राजनीति में शामिल हो जाते हैं। यह फिल्म एक रास्ता भर दिखाती है कोई समाधान प्रस्तुत नहीं करती।

2011 में प्रदर्शित फिल्म 'आरक्षण' सरकारी

नौकरी और कॉलेज में दाखिले के लिए जाति आधारित आरक्षण के मुद्दे पर आधारित थी। इस फिल्म में सैफ अली खान. दीपिका पादुकोण, अमिताभ बच्चन, मनोज बाजपेयी और प्रतीक बब्बर जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में थे। फिल्म 'आरक्षण' में आरक्षण के पक्ष और विपक्ष में के रूप को दिखाया गया है। इस फिल्म का निर्देशन प्रकाश झा ने किया है। यह फिल्म क्षणिक उत्तेजना पैदा करने में सफल हुई। लेकिन, मील का पत्थर नहीं बन सकी। अनुराग कश्यप की फिल्म 'गुलाल' हिंदी सिनेमा की कल्ट फिल्मों में से एक है। 'गुलाल' में राजस्थान के कॉलेज और यूनिवर्सिटी की छात्र राजनीति को दिखाया गया है। यह छात्रों के चुनाव लड़ने से लेकर प्रदर्शन तक की कहानी कहती है। 'रांझणा' में दो कहानियां दिखाई गई। एक प्रेम कहानी और दूसरी जेएनयू की राजनीति। फिल्म 'रांझणा' में भट्ठा पारसौल के किसानों और छात्रों का आंदोलन दिखाया गया। फिल्म रांझणा में अभिनेता धनुष, अभय देओल, सोनम कपूर और स्वरा भास्कर सहित कई कलाकार मुख्य भूमिका में थे।

अक्षय कुमार अभिनीत फिल्म 'गब्बर इज बैक' का नायक भी एक शिक्षक ही रहा है। वह भ्रष्टाचार के खिलाफ अलग किस्म का युद्ध छेड़ता है। उसके साधन उसके साध्य को अपवित्र कर देते हैं। आत्म समर्पण करके सजा भुगतने जाते हुए वह स्वीकार करता है कि उसका तरीका गलत था, परंतु वही उसका एकमात्र विकल्प भी था। सोए हुए मनुष्य को जगाया जा सकता है, परंतु जागते हुए सोने का अभिनय करने वालों को कैसे जगाया जा सकता है।

अभिनेता सनी कौशल, विजय वर्मा और नुसरत भरुचा की . फिल्म हुड़दंग भी छात्र राजनीति के साथ आरक्षण और सामाजिक समानता पर आधारित है.

फिल्म हुड़दंग का निर्देशन निखिल भट्ट ने किया है। राजकुमार हिरानी और आमिर खान की 'थ्री-ईडियट्स' भी परीक्षा प्रणाली पर करारा व्यंग्य करती है। डिग्रियां हासिल करना ज्ञान प्राप्त करने से अलग है। नायक अपने पिता के मालिक के बेटे के नाम से डिग्री प्राप्त करता है। ज्ञान से वह अपना नया संसार खड़ा करता है। वर्तमान में संसारभर में छात्र आंदोलन कर रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व चीन के तियानमेन स्क्वायर पर छात्र एकत्रित हुए थे। उस आंदोलन को हिंसा द्वारा दबा दिया गया। चीन में व्यापक असंतोष है और इमारतों के बेसमेंट में छात्र एकत्रित होते हैं। दिल्ली में भी पुलिस परिसर में घुस गई और छात्राओं को भी नहीं बख्शा गया। सभी मोर्चों पर असफल व्यवस्थाएं छात्राओं पर लाठी बरसाते हुए अपनी झेंप मिटाने का हास्यास्पद प्रयास कर रही हैं।

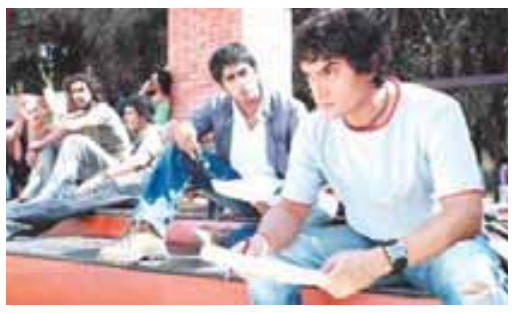

फिल्म बनाने के लिए छात्र आंदोलन अच्छा विषय प्रदान करते हैं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेते हुए कुछ छात्रों ने परीक्षाएं नहीं दीं और कुछ समय बाद वे फिल्म निर्माण से जुड़ गए। तीसरा प्रभाव यह है कि छात्र आंदोलन के कारण लगाए गए कर्फ्यू में सिनेमाघर बंद हो जाते हैं। छात्र वर्ग ही सबसे बड़ा दर्शक वर्ग है। सभी समस्याओं के निदान में असफल व्यवस्था इंटरनेट, टेलीफोन इत्यादि संचार माध्यमों पर रोक लगा देती है। नेपाल में यही हुआ था । जिसके परिणामस्वरूप पूरा देश धधक उठा था। राम गोपाल वर्मा की पहली फिल्म 'शिवा' की पृष्ठभूमि छात्र आंदोलन ही थी।

प्रकाश झा की 'सत्याग्रह' की पृष्ठभूमि भी शिक्षा ही थी, परंतु फिल्म केवल प्राइवेट ट्यूशन माफिया में सिमटकर रह गई। केवल अच्छे इरादों से सार्थक फिल्में नहीं बनती। अच्छी फिल्में बनाने के लिए कुछ और भी करना होता है। लेकिन फिलहाल ऐसा कुछ होता दिखाई नहीं देता क्योंकि छात्र आन्दोलन राजनीति से प्रेरित होते हैं और फिल्मकारों के सामने भी इस विषय को ईमानदारी के साथ फिल्मों में शामिल करना एक चुनौती है। क्योंकि, यदि वह किसी एक गुट के आंदोलन को फिल्मों में शामिल करते हैं तो विरोधी गुट पोस्टर फाड़कर फिल्म को सिनेमा घर से उतारने के लिए सड़कों पर उतर जाएगा । लिहाजा यह विषय फिल्मों के लिए सतही ही बनकर रहने वाला है।

हिंदी भाषी समाज ही कर रहा हिंदी की उपेक्षा

हिंदी दिवस विशेष

डॉ. जवाहर कर्नावट
अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र,रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय,भोपाल

हिंदी दिवस 14 सितंबर के अवसर पर सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर औपचारिक आयोजनों की संख्या लगातार बढती जा रही है, किंतु हिंदी का दुर्भाग्य है कि हिंदी का गुणगान करने वाले हिंदी पट्टी के लोग उसे सम्मान का प्रतीक नहीं मानते। इसका दोहन करने वाले प्रगति की सीढ़ियाँ तो हिंदी से चढ़ते हैं और थोड़ा बहुत पढ़-लिख जाने के बाद हिंदी को त्याज्य मान लेते हैं। भाषा संस्कृति और संस्कार की वाहक होती है। इसकी अवहेलना के कारण ही हिन्दी भाषी प्रांतों में अप-संस्कृति बढ़ती जा रही है। देश के हिंदीतर प्रांतों में यह स्थिति इतनी बदतर नहीं है। देश के हिंदी-भाषी राज्यों की लगभग 60 करोड़ से अधिक आबादी में अधिकांश जनता इसलिए भी बदहाल है कि वे बेहद असमंजस की स्थिति में जी रहे हैं। न तो वे हिन्दी को अपना रहे हैं और न ही अंग्रजी को पचा पाने की स्थिति में हैं। यहां की शहरी, अद्धशहरी एवं ग्रामीण आबादी भी अंग्रेजी की तरफ यूं भाग रही है जैसे उन्हें अब केवल इंजीनियर, आई.टी. और मैनेजमेंट गुरूओं की ही आवश्यकता है - प्रगतिशील कृषकों, कुशल कारीगरों और श्रमिकों की नहीं। इन राज्यों की जनता अपने भाषायी अधिकारों के प्रति भी बेहद उदासीन है। चंद अंग्रेजीपरस्त लोगों की सुविधा के खातिर बहुसंख्यक हिंदीभाषी समाज को अपनी भाषा से वंचित रखने का षड्यंत्र बखूबी जारी है। प्रजातांत्रिक व्यवस्था में लोक-कल्याणकारी योजनाओं की असफलता का मुख्य कारण आमजन से संवादहीनता भी है। यह स्थिति निर्मित होती है- आमजन और प्रशासन की भाषा में अंतर के कारण। तमाम भाषायी कायदे-कानूनों के बावजूद ये योजनाएं लोकभाषा में नहीं होने के कारण लक्ष्य समूह तक नहीं पहुँच पातीं।

राजनीतिक दलों ने भी आम जनता के भाषाई अधिकारों की पैरवी कभी नहीं की और जनता ने भी सरकारी दफ्तरों से उपजने वाली अबूझ भाषा का विरोध करने का कभी साहस नहीं जताया। इन स्थितियों में हिन्दीभाषी राज्यों में हिन्दी पनपेगी कैसे? कहने को तो मीडिया के कारण हिन्दी खूब फली-फूली है, किंतु हिंदी का यह स्वरूप अब उसे भाषा के स्थान पर बोली बनाने की ओर अग्रसर कर रहा है। विज्ञापन की दुनिया अब उसे अपनी लिपि देवनागरी से वंचित कर रोमन की सवारी कराने पर आमादा है। सूचना-प्रौद्योगिकी में हिंदी में उपलब्ध ढेरों सुविधाओं से भी हिंदी भाषी समाज बेखबर है। अपनी भाषा में विकसित अनेक पैकजों के प्रयोग की बात तो दूर, वह उनके नाम से भी परिचित नहीं है।

इधर हिंदी प्रदेशों के सार्वजनिक स्थलों और बाजारों से भी हिंदी गायब होती जा रही है। इंदौर भोपाल ,रायपुर ,जबलपुर आदि शहरों में भ्रमण करते हुए साइन बोर्डों की भाषा देखकर ऐसा लगता है कि आप भारत में नहीं अंग्रेजों के देश में विचरण कर रहे हैं। इस स्थिति से निपटने के लिए महाराष्ट्र ,उड़ीसा, तेलंगाणा और कर्नाटक की राज्य सरकारों ने अपने साइन बोर्ड में राज्य की भाषा को प्रथम स्थान पर रखने के लिए कानून बना दिया है और उल्लंघन पर दंड की व्यवस्था भी की गई है, किंतु हिंदी प्रदेश की सरकारें सुप्तावस्था में है। सामान्य उपभोक्ताओं द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं पर भी सारा विवरण अंग्रेजी में ही होता है। इस भाषायी अराजकता के खिलाफ आवाज उठाने वाला कोई नहीं है। हिंदी की संस्थाएँ केवल कविता, कहानी, पुस्तक-लोकार्पण और सम्मान-समारोह का आयोजन कर अपनी-अपने उद्देश्यों की इति श्री मान लेती हैं। इन आधारभूत गंभीर समस्याओं की ओर ध्यान देने की तुरंत आवश्यकता है।

हमारे दैनिक जीवन एवं सामाजिक व्यवहार में हिंदी से बखूबी काम चलाया जा सकता हो, वहां भी हिंदीभाषी समाज अंग्रेजी को ठूंसने में लगा हुआ है। अब तो धार्मिक समारोहों और विवाह जैसे पवित्र संस्कार के आमंत्रण में भी अंग्रेजी का प्रयोग यूं किया जा रहा है जैसे सारे मेहमान विदेशों से आने वाले हैं। अंग्रेजी ज्ञान में शून्य फूल-सब्जी बेचने वाले से लेकर व्यापारी वर्ग अपनी दुकानों के बोर्ड हिंदी में नहीं लगवा सकते। बिल हिंदी में नहीं छपवा सकते। आखिर ऐसे कार्यों में हिंदी से परहेज़ क्यों ? इन आधारभूत गंभीर समस्याओं की ओर ध्यान देने की तुरंत आवश्यकता है।

हमारी शिक्षण संस्थाओं में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का ग्राफ लगातार नीचे की ओर जा रहा है। यह विडंबना है कि 2015 में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन करने वाले भोपाल शहर के सबसे पुराने बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय में हिंदी का स्वतंत्र विभाग ही नहीं है। हिंदी विभाग न होने से हिंदी भाषा और साहित्य में शोध की रुचि रखने वाले विद्यार्थियों का मात्र रजिस्ट्रेशन विश्वविद्यालय में होता है।

यदि हिंदीभाषी समाज ही अपनी जड़ों से कटता जाएगा तो अन्य भाषा- समाजों में हिंदी के स्थान की क्या अपेक्षा की जाए? देश में उद्योग, वाणिज्य, कला, विज्ञान, प्रशासन, न्याय प्रौद्योगिकी के शिखर पर बैठे अनगिनत हिंदीभाषी अपने आचरण और समर्पण से हिंदी को समृद्ध कर सकते हैं। ऐसा होने पर आमजन भी उनसे प्रेरित होंगे और हिंदी की ताकत का समाज के विकास में उपयोग हो सकेगा। इस बात की बार-बार दुहाई दी जाती है कि हिन्दी में साहित्येतर विषयों पर पठनीय सामग्री की बेहद कमी है, किंतु आखिर इस कमी की पूर्ति कौन करेगा? यह कार्य वही हिंदी भाषी व्यक्ति कर सकता है, जो संबंधित विषय का विशेषज्ञ भी हो। इस मार्ग में सबसे बड़ी बाधा केवल अनुवाद के भरोसे बैठे रहना है। इसके लिए वह पूरी पृष्ठभूमि दोषी है, जिसके तहत यह मान लिया गया है कि मौलिक प्रयत्नों के बदले अनुवाद के जरिए हिंदी को बढ़ावा दिया जाए। हिंदी भाषी समाज को अब यह समझना होगा कि अपनी भाषा को व्यापक स्वरूप में प्रतिष्ठित करने की जिम्मेदारी भी उसी की है।

भाषा विमर्श में हिंदी

हिंदी दिवस विशेष

चित्रा माली
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवी
क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

स्वतंत्रता मिलने के दो वर्ष बाद से 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में एक मत से हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया था और इसके बाद से हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू होने के साथ साथ राजभाषा नीति भी लागू हुई। संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के तहत यह स्पष्ट किया गया है कि भारत की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप है। हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी सरकारी कामकाज में किया जा सकता है। अनुच्छेद 343 (2) के अंतर्गत यह भी व्यवस्था की गई है कि संविधान के लागू होने के समय से 15 वर्ष की अवधि तक, अर्थात वर्ष 1965 तक संघ के सभी सरकारी कार्यों के लिए पहले की भांति अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग होता रहेगा।

व्यक्ति का विश्वास, सामाजिक अनुभवजन्य ज्ञान,सांस्कृतिक व जीवन-मूल्य,मानव समुदाय के नियमन की पद्धतियां,नैतिकताएं, प्रतिरोध तथा सामाजिक संघर्ष उसकी भाषा के माध्यम से ही संभव हो पाते हैं। महत्वपूर्ण यह है कि हम भाषा को कैसे देखते हैं? क्या हम भाषा को एक विषय के तौर पर देखते है जिसका एक पाठ्यक्रम,कालांश और परीक्षा होती है। भाषा को विषय के तौर पर महज पढ़ना,अर्थ के साथ पढ़ना या यांत्रिक रूप से अनुवादित रूप को पढ़ना है। या एक माध्यम के रूप में जिसके जरिए अन्य विषयों का ज्ञानार्जन किया जा सकता है। भाषा अर्थ का निर्माण करती है। भाषा मानसिक संरचना को बनाने वाली और मानसिक विकास का एक जरिया है। स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद भाषा का प्रश्न हमेशा से केंद्र में रहा है।

स्वतंत्रता मिलने के दो वर्ष बाद से 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में एक मत से हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया था और इसके बाद से हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू होने के साथ साथ राजभाषा नीति भी लागू हुई। संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के तहत यह स्पष्ट किया गया है कि भारत की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप है। हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी सरकारी कामकाज में किया जा सकता है। अनुच्छेद 343 (2) के अंतर्गत यह भी व्यवस्था की गई है कि संविधान के लागू होने के समय से 15 वर्ष की अवधि तक, अर्थात वर्ष 1965 तक संघ के सभी सरकारी कार्यों के लिए पहले की भांति अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग होता रहेगा। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, मैथिलीशरण गुप्त, हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, सेठ गोविन्ददास, व्यौहार राजेन्द्र सिंह आदि साहित्यकारों ने अथक प्रयास किए है। स्वतंत्रता के पूर्व भारतीय नवजागरण और आजादी के आंदोलन के काल के राष्ट्रीय विचारकों,नेताओं और बुद्धिजीवियों ने बिना किसी मानसिक दुविधा और पूर्वाग्रह के अंग्रेजी भाषा और अन्य विदेशी भाषाएं सीखी थी। तथा बिना किसी संकोच के इन भाषाओं में सोचने और लिखने का कार्य भी किया था। बुद्धिजीवियों, विचारकों और राष्ट्रीय नेताओं ने आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और चिंतन धारा तक पहुंचने का साधन अंग्रेजी भाषा को माना था। उनका यह भी मानना था कि अपनी भाषाओं में मौलिक चिंतन और सृजन की क्षमता प्राप्ति के द्वार भी अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के रचनात्मक उपयोग के द्वारा ही खुलेंगे। अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं को उन्होंने आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को अर्जित और प्रसारित करने के माध्यम के रूप में देखा था। उनके द्वारा अंग्रेजी के व्यापक उपयोग और व्यवहार ने भारतीय भाषाओं के प्रति अनादर और उपेक्षा का रूप कभी नहीं लिया था। भारतवासियों के लिए 'मानसिक स्वराज' के द्वार तभी खुलेंगे जब अंग्रेजी का ज्ञान भारतीय भाषाओं के विकास और समृद्धि का कारण बनेगा,उनकी उपेक्षा और अवनति का नहीं। गांधी जी ने अपने देशवासियों को सलाह दी थी उसमें अंग्रेजी के परित्याग की बात नहीं थी बल्कि अंग्रेजी का देशहित में उपयोग कैसे किया जाए इस पर चर्चा की

गई थी। 1921 में 'यंग इंडिया' में लिखे एक लेख में गांधी लिखते हैं कि मैं नहीं चाहता कि मेरा घर चारों ओर से प्राचीरों से घिरा हुआ हो और मेरी खिड़कियां बंद हो। मैं चाहता हूं कि मेरे घर में सभी देशों की संस्कृतियों का बिना रोक - टोक के प्रवेश हो। लेकिन मैं नहीं चाहता कि कोई भी संस्कृति मुझे अपनी जड़ों से उखाड़ दे। अपने लेख में गांधी आगे लिखते हैं कि ÷मुझे कोई आपत्ति नहीं है कि हमारे नवयुवक और नवयुवतियां जितना चाहे अंग्रेजी और विश्व की अन्य भाषाएं सीखें। लेकिन मैं उनसे उम्मीद करता हूं कि वे अपने ज्ञान का पूरा-पूरा लाभ अपने देशवासियों को और विश्व को दें। मैं यह कभी बर्दाश्त नहीं करूंगा कि एक भारतीय अपनी मातृभाषा के प्रति हीन भाव महसूस करे और यह समझे कि वह देशी भाषा में न उच्च कोटि के विचार कर सकता है और न व्यक्त कर सकता है। यह एक प्रकार से मानसिक गुलामी है जो अंग्रेजी के वर्चस्व को बनाए रखती है।

महात्मा गांधी का यह दृढ़ मत था कि अंग्रेजी वर्चस्व के कारण भारतीय भाषाएं उपेक्षित और दरिद्र हुई हैं तथा भारतीय प्रतिभा कुंठित और अवरुद्ध हो गई है। महात्मा गांधी की राय में अंग्रेजी वर्चस्व के कारण आज भारत की ऐसी अवस्था हो गई है कि वह कबीर की टक्कर के एक भी महान चिंतक को जन्म देने में समर्थ नहीं,जिसने जनसाधारण के मानस पर सदियों तक गहरा और स्थायी प्रभाव डाला था। महात्मा गांधी अंग्रेजी के वर्चस्व और उससे निर्मित मानसिक गुलामी का प्रतिकार आवश्य करते हैं,लेकिन अंग्रेजी भाषा का नहीं। स्वतंत्रता के कुछ वर्ष पूर्व गांधी जी ने अंग्रेजी भाषा के महत्व पर टिप्पणी की थी अगर हिंदी अंग्रेजी की जगह ले ले तो मुझे अवश्य खुशी होगी। लेकिन हम सभी अंग्रेजी के महत्व से अवगत हैं। अंग्रेजी का ज्ञान हमारे लिए आधुनिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए,आधुनिक साहित्य अध्ययन के लिए, दुनिया को समझने के लिए,शासकों के साथ संवाद बनाए रखने के लिए तथा अन्य उद्देश्यों के लिए बहुत जरूरी है।

बंगाल और महाराष्ट्र नवजागरण का केंद्र रहे हैं, वहां के अंग्रेजी में शिक्षित समुदाय ने बंगाली और मराठी को अपने चिंतन और लेखन का अंग्रेजी के बराबर का माध्यम बनाया था। लेकिन इसके बरक्स हिंदी क्षेत्र के विद्वानों ने अंग्रेजी की तुलना में हिंदी को उतना महत्व नहीं दिया। अंग्रेजी के प्रति अंधभक्ति की प्रवृत्ति ने मौलिक सामाजिक चिंतन की प्रक्रिया को अवरुद्ध किया और अंधविरोध की प्रवृत्ति ने समाज संबंधी आधुनिक ज्ञान और विज्ञान से निरंतर संपर्क और परिचय के सभी मार्ग बंद कर दिए और अज्ञान और बौद्धिकता - विरोधी मनोवृत्ति को बल प्रदान किया है। इन दोनों ही प्रवृतियों ने समाज की सामाजिक प्रक्रिया को क्षतिग्रस्त किया है। हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्र इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि जो क्षेत्र अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं की जानकारी द्वारा आधुनिक ज्ञान और विज्ञान को हासिल करने के लिए सक्रिय नहीं रहे,वह अपनी भाषा के माध्यम द्वारा ज्ञान के अर्जन,सृजन और प्रसार की प्रक्रिया को तेज करने और इस प्रक्रिया में साधारण जन को भी शिक्षा के प्रसार द्वारा भागीदार बनाने में भी सक्रिय नहीं रहे हैं। अभी हाल ही में महाराष्ट्र की घटना ने भाषा को सार्वजनिक चर्चा का विषय बना दिया है। महाराष्ट्र में त्रिभाषासूत्र को लागू कर हिंदी को तीसरी भाषा के रूप में सभी स्कूलों में अनिवार्य किया गया जिसके परिणामस्वरूप वहां के लोगों ने आंदोलन शुरू कर दिया और अंततः इस निर्णय को खारिज कर दिया गया। इसके पूर्व तमिलनाडु में भी हिंदी को तीसरी भाषा के रूप में अनिवार्य तौर पर लागू किए जाने का विरोध किया गया था। 1964 में कोठारी कमीशन ने हर प्रांत में त्रिभाषा सिद्धांत को लागू किए जाने की अनुशंसा की थी जिसमें संविधान की आठवीं अनुसूची में रखी गई भाषाओं के अतिरिक्त हिंदी के भीतर की अन्य भाषाओं को भी उसमें शामिल किया गया था। प्रदेशों के लिए एक अन्य भाषा जो उस प्रदेश की भाषा न हो हिंदी प्रदेशों में मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश,बिहार, राजस्थान में दक्षिण की कोई एक भाषा लेकिन सभी हिंदी प्रदेशों ने इस निर्णय को एक सिरे से खारिज कर तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत को स्वीकार कर लिया था। इस प्रकार के निर्णय से अहिंदी भाषी प्रदेशों में हिंदी का विरोध होने लगा। जबकि हिंदी जन सामान्य की भाषा है जिसे सबसे अधिक लोग समझते और बोलते हैं। इसके सबसे सशक्त उदाहरण के तौर पर हिंदी सिनेमा को देखा जा सकता है जो न सिर्फ देश भर में बल्कि विदेशों में भी हिंदी समझने वालों की संख्या में लगातार इजाफा करता रहता है। हिंदी सिनेमा में अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों की भी बेरोकटोक आवाजाही है जिससे हम सभी उन भाषाओं के शब्दों से परिचित होते रहते हैं। लोकप्रिय सिनेमा के कई सुपरहिट गीतों की शुरुआत मराठी,गुजराती,बंगाली,नेपाली,तेलुगू,भोजपुरी , राजस्थानी भाषा के शब्दों से हुई है और साथ ही अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों का भी समावेश हिंदी के साथ किया गया है। हिंदी भाषा को अन्य भारतीय भाषाओं के बरक्स रखने के बजाए उसे समावेशी बनाने की आवश्यकता है जिससे हिंदी अधिक समृद्ध होगी और अन्य भाषाओं का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहेगा। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का सहअस्तित्व ही भारत की भाषाई विविधता की संस्कृति को बचाए और बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

बोलियाँ व राष्ट्रभाषा

हिंदी दिवस पर विशेष

रघु ठाकुर
लेखक समाजवादी विचारक हैं।

फिर से एक बार देश में हिन्दी विरोधी अभियान शुरु हुआ है। कुछ शैक्षणिक संस्थाओं ने शोध कार्य के लिये अंग्रेजी की अनिवार्यता तय की है। निजी शिक्षण संस्थाओं में विशेषतरू बाल शिक्षा (के.जी) और प्राथमिक शिक्षा में न केवल अंग्रेजी को अनिवार्य रुप से पढ़ाया जाता है बल्कि स्कूल के अन्दर अंग्रेजी में ही बात-चीत करना अलिखित तौर पर अनिवार्य कर दिया गया है यानि शिक्षण संस्थाओं में अंग्रेजी ज्ञान के साथ-साथ अंग्रेज भी तैयार किये जा रहे है। बच्चों को स्कूल के अन्दर हिन्दी बोलने पर दण्डित व अपमानित किया जाता है। इन शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी बोलना असभ्यता का पर्याय माना जाता है। अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता भी गर्व के साथ बताते है कि उनका बच्चा अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ रहा है और वे भी बच्चों से दैनिक जीवन में अंग्रेजी में बातचीत का प्रयास करते है। कुछ अंग्रेजी पढ़े माँ-बाप तो हिंग्लिश का प्रयोग करते है। यानि कुछ शब्द हिन्दी कुछ अंग्रेजी। रेल यात्रा में अकसर इस हिंग्लिंश का प्रयोग सुनता हूँ। जहाँ माता-पिता बच्चे से कहते है बेटे श्शू पहना दूँय आदि। और फिर कुछ शान के साथ बताते कि मेरा बेटा तो अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय मे पढ़ता है। नौजवान जो अंग्रेजी स्कूल में पढ़े लिखे व अंग्रेजी के उच्चारण को कुछ इस प्रकार से अटक-अटक कर करते हैं जिस प्रकार यूरोप या अमेरिकी लोग करते हैं। यानि भाषा और उच्चारण दोनों में नकल है। स्थिति यहाँ तक पहुँची है कि महानगरों में अंग्रेजी के अमेरिकी, एवं ब्रिटिश उच्चारणों के तरीकों को भी सिखाने वाली संस्थायें शुरु हो गई है। इन देशों में नौकरी के लिये जाने वाले या नौकरी तलाशने वाले नौजवान इस अटकउल अंग्रेजी सीखने पर पैसा भी खर्च करते हैं और गौरवान्वित होते हैं!

पिछला श्विश्व हिन्दी सम्मेलन्य म.प्र. की राजधानी भोपाल में हुआ था। जिसका उद्घाटन करने के लिये प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी आये थे। इस सम्मेलन में काफी सरकारी पैसा भी खर्च हुआ था। भले ही यह विश्व हिन्दी सम्मेलन संकीर्ण मानसिकताओं की वजह से भा.ज.पा सत्तापक्षी हिन्दी सम्मेलन या सरकारी सम्मेलन जैसा बन गया था, तथा गाँधी से लेकर गाँव तक इस सम्मेलन में उपेक्षित थे। फिर भी यह उम्मीद लोगों के मन में थी कि इस सम्मेलन के बाद सरकार हिन्दी व राष्ट्रभाषा के लिये कुछ करेगी। परन्तु सदा की तरह लोगों को निराशा ही हाथ लगी। और सरकारी तंत्र में हिन्दी का स्थान बढ़ने के बजाय कम ही होता गया। अगर सरकार ने थोड़ा भी प्रयास किया होता तो कम से कम सरकारी सूचनाओं में तथा सूचना तकनीक में हिन्दी का स्थान बन सकता था। परन्तु पिछले लगभग दो ढाई वर्षों में जितनी भी सरकारी योजनाओं की चर्चा हुई है उनके तो नाम तक हिन्दी में नहीं है। वे चाहे श्मेक इन इंडिया्य हो, एमएसएमई हो, कैशलेश हो इत्यादि-इत्यादि। न्यायपालिका में भी अगर सरकार ने पहले चरण में अंग्रेजी के साथ हिन्दी भाषा की अनिवार्यता को लागू कर दिया होता तो भी हिन्दी का मार्ग प्रशस्त होता तथा व्यक्ति अपनी इच्छा से अपनी भाषा का चयन कर सकता था। देश के अंग्रेजी समर्थकों ने संभव है कि वैश्वीकरण की ताकतों और कारपोरेट के इशारों पर हिंदी के खिलाफअंग्रेजी के पक्ष में सुनियोजित अभियान चलाया है। कांग्रेस पार्टी के तिरुवनंतपुरम के सांसद व पूर्व मंत्री श्री शशि थरूर जो देश में सुनंदा पुष्कर कांड से ज्यादा चर्चित हैं, ने हिंदी के विरुद्ध एक नई बहस शुरू की थी। उन्होंने अपने लेख में चार बिंदु उठाये थे-

1. हिन्दी भाषा जाति का रूप ले रही है और हिन्दी जाति बन रही है।
2. राष्ट्र भाषा या हिन्दी की चर्चा करना, यह हिन्दी के द्वारा दूसरी भाषाओं का दमन करना है।
3. हिन्दी देश के मात्र 50 प्रतिशत की भाषा है वह भी तब जब 47 बोलियों को जैसे कि भोजपुरी, मगधीं, बुंदेली आदि को इसमें शामिल माना जाये। हिन्दी बोलियों को पीछे कर रही है।
4. तमिलनाडु या कलकत्ता में कोई हिन्दी बोलने वाला या समझने वाला नही है तथा हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने से एक नई भाषा का बोझ बढ़ेगा।
5. एक राज्य दूसरे राज्य के लिये अगर अपनी भाषा में पत्र लिखेगा तो वह दूसरे राज्य के लिये कठिन होगा। उन्होंने तमिलनाडु के द्वारा उड़ीसा राज्य को पत्र लिखने तथा स्व.ज्योति बसु के द्वारा प. बंगाल की ओर से तत्कालीन रक्षामंत्री श्री मुलायम सिंह यादव को बंगला भाषा में पत्र लिखने का उल्लेख किया था।

उनके संशयों के निराकरण के लिये निम्न पर ध्यान देना जरुरी है -

(अ.) हिन्दी किसी एक प्रेदश की भाषा नही है और न जाति की बल्कि हिन्दी देश के बड़े इलाके में बोली व समझी जाने वाली भाषा है। गुजरात, महाराष्ट्र, जैसे की गैर हिन्दी भाषी प्रदेश में भी अगर हिंदी बोली समझती जाती है तो इसका अर्थ है कि हिंदी किसी जाति की भाषा नहीं है, अगर जाति भाषा होती हो, तो समूचे यूरोप की भाषा अंग्रेजी होती, परंतु फ्रांस, जर्मनी, तुर्की, स्पेन आदि कितने ही देशों की भाषा अंग्रेजी नहीं है वरन उनकी अपनी केन्द्रीय भाषायें हैं और देश की बड़ी आबादी के द्वारा बोली व समझी जाने वाली भाषा है। श्री थरुर को क्या इतना भी ज्ञान नही है कि भाषा जातियों की नही होती बल्कि क्षेत्रों की होती है। गुरुवर रविन्द्र नाथ टैगोर और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने भी हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का समर्थन किया था। बंगला भाषा का अधिकांश साहित्य हिन्दी में अनुवादित भी है और पढ़ा जाता है। बंगाल के काफी बड़ी संख्या में लोग छत्तीसगढ़, बिहार, उ.प्र. के इलाकों में और विशेषतरू बनारस, इलाहावाद आदि में भी बसे है। आजादी के बाद राजधानी दिल्ली में बड़ी संख्या में बंगाली

परिवार आ कर बसे हैं। ये सब हिन्दी समझते और हिन्दी में बात करते है। महात्मा गांधी ने जो स्वत गुजराती भाषी थे, हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव किया था। हिंदी एक बड़ी आबादी व क्षेत्र की बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

(ब) दुनिया में सभी जगह क्षेत्रीय भाषायें तो होती हैं परंतु एक राष्ट्रभाषा भी होती है जो समूचे देश के लिए होती है। रूस, चीन, ब्रिटेन, अमेरिका, आदि कितने ही उदाहरण दिये जा सकते हैं। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग करने से दूसरी भाषाओं का दमन कैसे होता है? अंग्रेजी कोई तमिलनाडु, केरल या दक्षिण के प्रदेशों की क्षेत्रीय भाषा नहीं है बल्कि अंग्रेजी यहां ब्रिटिश हुकूमत के बाद ही आई। आदि-शंकराचार्य व तमिल तेलगू, मलयाली, कन्नड़ भाषी लोगों का आना जाना उत्तर भारत में हजारों साल से होता रहा है। जब श्री राम लंका गये थे तब क्या वे अंग्रेजी में संवाद करते थे? क्या रावण व लक्ष्मण का संवाद, विभीषण और राम का संवाद अंग्रेजी में हुआ था। देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं व हिंदी के ज्यादातर शब्द एक जैसे है। बंगाल का जल या हिंदी का पानी समझने में किसी को दिक्कत नहीं होती। केरल, तमिलनाडु या आंध्रप्रदेश कर्नाटक के ग्रामीण अचंलों के लोग हिंदी की फिल्में देखते हैं, हिंदी के गाने सुनते हैं और इन प्रदेशों के ग्रामीणजनों को आज भी अंग्रेजी सीखना पड़ती है। दमन तो सही अर्थों में अंग्रेजी कर रही है, जो देशज योग्यता और उसके अवसरों को भाषा की कटौती के आधार पर अवसर पाने के पूर्व ही प्रतिभा को नष्ट कर देती है। अगर अंग्रेजी हुकुमत आने के बाद लोगों ने अंग्रेजी सीख ली तो वे हिंदी भी सीख सकते हैं। अंग्रेजी भाषा देश के 80-90 करोड़ लोगों की योग्यता व अवसरों का दमन है। दरअसल प्रतिभा क्षमता और योग्यता से आम भारतीय को पृथक करने वाली ताकतें अंग्रेजी भाषा की तलवार का इस्तेमाल कर रही है।

(स) यह दुखद है कि महाराष्ट्र में शिवसेना के विरोध से डरकर भाजपा सरकार ने प्राथमिक शिक्षा से हिंदी की पढ़ाई रोक दी है और जो संघ व भाजपा हिंदी हिंदु हिंदुस्तान का नारा लगाते थे अब मुँह में सत्ता का घी पीकर चुप बैठे हैं।

(द) हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने का मतलब एक राष्ट्रीयता के भाव को पोषित व पल्लवित करना भी है। 1930 के दशक में जब स्व राजगोपालाचार्य ने तमिलनाडु में हिंदी शुरू की थी तब भी कुछ अंग्रेजी समर्थकों ने प्रांतीय भाषा और प्रांतीयता का सवाल उठाया था। तब महात्मा गांधी ने स्व राजगोपालाचार्य का समर्थन करते हुये कहा था कि-राष्ट्रीयता के प्रसार के लिये प्रांतीयता को भेदना आवश्यक है और हिंदी और प्रांतीय भाषायें या तमिल आदि एक साथ चलकर राष्ट्र को मजबूत करेगी।

(य) श्री शशि थरूर देश की 47 उन बोलियों का समर्थक बनने का छदम प्रयास कर रहे हैं जो हिंदी की शक्ति व जान है, वे हिंदी का अंग है। भाषा और बोली का फर्क क्षेत्रीय शब्दावली से नहीं होता है बल्कि लिपि के आधार पर होता है। हिंदी भाषा की इन बोलियों की लिपि देवनागरी है। दरअसल बोलियों के पक्षधर बनकर श्री थरूर अंग्रेजी का बहुमत बनाना चाहते हैं। अगर बोलियों को भाषा मान लिया जायेगा तो हिंदी खण्ड खण्ड हो जायेगी। अंग्रेजी देश की सबसे बड़ी बोली जाने वाली भाषा बन जायेगी और फिर अगले चरण में बहुत संभव है कि ये अंग्रेजी समर्थक लोग अंग्रेजी को भारत नही राष्ट्र भाषा बनाने की मुहिम चलायें।

मैं भारत की क्षेत्रीय व प्रान्तीय भाषा वालों से कहना चाहूँगा, कि अंग्रेजी समर्थकों के इस कपट च षडंयन्त्र को समझें व सावधान हो जाये। बोलियों को अगर भाषायें मान लिया जायेगा तो प्रान्तीय भाषायें भी टूट कर बिखरेगी। विदर्भ की मराठी, व पुणे की मराठी, कोकणी, आंध्र की तेलगू छ.ग. में बस्तर की गौडी व हल्बी आदि के उच्चारणों के आधार पर यहाँ के लोगों को भड़काया जायेगा तथा फूट डालो राज करो जो आजादी के पहले अंग्रेजी सिद्धांत था वह फिर सफल हो जायेगा। बोली भाषा नही है बल्कि एक भाषा का क्षेत्रीय प्रयोग है, उसके शब्द व उच्चारण है। बोलियों के लिए भी सरकार को संरक्षण देना चाहिये परन्तु बोलियों के रूप में, न की भाषा के रूप में। इसके लिये संविधान में एक पृथक प्रावधान जोड़ना चाहिये ताकि बोलियों के साहित्य व संस्कृति को सुरक्षित रखा जा सके।

मैं भारत सरकार से अपील करूँगा -

1. भारतीय संविधान में संशोधन कर बोलियो के संरक्षण के लिये पृथक प्रावधान जोड़ा जाये।
2. व्यक्ति विवरण में भाषा का कॉलम पृथक रहे जो लिपि आधारित हो और बोली के लिये पृथ्क कॉलम बनाया जा सकता है।
3. सरकार शिक्षण संस्थाओं में हिंदी और एक अन्य प्रादेशिक भाषा का ज्ञान अनिवार्य करें तथा अंग्रेजी एच्छिक भाषा रहे।
4. न्यायपालिका की भाषा फिलहाल कुछ समय के लिये प्रायोगिक व प्राथमिक तौर पर हिंदी व अंग्रेजी दोनों मुवक्किल की इच्छा से रखी जा सकती है।
5. राज्य व केंद्र का पत्र व्यवहार हिंदी व प्रांतीय भाषा में आरंभ करें तथा अखिल भारतीय सेवाओं के चयन में सी सेट टू के माध्यम से, अंग्रेजी व का अनिवार्य पर्चा समाप्त है।

राष्ट्रीय एकता के लिय एक राष्ट्र भाषा जरूरी है और उसका स्थान लेने की क्षमता सारे संकटों के बावजूद अभी भी केवल हिंदी भाषी के पास ही है।